आर एन आई नम्बर UPHIN/2017/74520

साहित्य सरोज

वर्ष-3 अंक -4 गहमर त्रैमासिक अक्टूबर 2020 से दिसम्बर 2020 मुल्य 30

बेवसाइटः https://sarojsahitya.page ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-3 अंक -4

माह अक्टूबर 2020 से दिसम्बर 2020

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादक -: श्रीमती कान्ति शुक्ला ''उर्मि'' भोपाल

प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

संपादक -: डा० कमलेश द्विवेदी, दशरपुरवा कानपुर

अध्यक्ष तकनीकी विभाग -: श्री राजीव यादव

प्रधान कार्यालय -: मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

प्रधान कार्यालय व्यवस्थापक :-

प्रशांत कुमार सिंह

ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

9451647845

बेवसाइट-: https://sarojsahitya.page

मोबाइल अप्लीकेशन प्ले स्टोर- साहित्य सरोज

प्रति अंक -30रूपये मात्र,

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, तहसील जमानियाँ, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयाँ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर

चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।

हमें करें फालो टियूटर पर और सस्क्राइव करें हमारे यूटियूब चैनल साहित्य सरोज को अखंड गहमरी''

अनुक्रमाणिका

पहली तनख़्वाह	मनोरमा जैन	02
आजादी के मतवाले	कंचन जायसवाल	03
साइलेंन्ट शब्दों की कहानी	अरूण अर्णव खरे	04
जब उसने कुछ लिखा	सीमा रानी मिश्र	05
लव जेहाद	अलका पाण्डेय	06
असंतृप्त बसा	प्रीति चौधरी	08
बताना छोड़ दिया	नेहा शर्मा	09
अहम् ब्रह्म अस्मि	मीना अरोड़ा	10
चंद्रलोक	अनुभा वर्मा	11
सुन्दर कांड	डॉ श्रीराम सिंह	13
प्यार की चाहत	निरूपमा त्रिवेदी	15
साहित्यकार बनिए	डॉ नीरज सुधांशू	16
उजाला आयेगा	दीप्ति सिंह रघुवंशी	18
देश की न्यायपालिका	सरिता भाटिया	19
हिंदी सिनेमा पर विशेष	डॉ पुनिता बिसारिया	20
लौकी की आत्मकथा	लोकेन्द्र मणि दीपक	22
महामारी में स्त्री	डॉ अनुराधा कुमारी	23
मनभवरा	डॉ प्रियंका सोनी	26
बेचारे जज साहेब	रेखा शर्मा	27
चॉद का इश्क	रेनुका सिंह	28
चॉद	नीता चतुर्वेदी	28
पीड़ा	बबिता सिंह	29
जय भवानी	पुष्पा गजपाल	29
वीर जवान जसवंन्त सिंह	सोशलमीडिया से	30
चेहरे पर मुस्कान	मीरा द्विवेदी वर्षा	32
सहेली सच्ची या झूठी	रेखा शर्मा	33
मेरी सखी सुधा	कांति शुक्ला	34
अन्नदाता	सुखमिला अग्रवाल	35

आगामी अंक के लिए रचना, कविता कहानी भेजें बने साहित्य सरोज के वार्षिक पाठक सदस्य

sarojsahitya55@gmail.com

https://sarojsahitya.page

पहली तनख़्वाह

परिस्थितियाँ कब, कहाँ, किस मोड़ पर अपना रंग दिखा दें कुछ पता ही नहीं चलता।कुछ घटनायें अपनी अमिट छाप छोड़ जाती हैं। 15अक्टूबर ,2015 को एक प्राइवेट स्कूल की जाब के लिए इंटरव्यू देने गयी ।कुछ पता नहीं था क्या करना है ,क्या पूछेंगे और मेरे जबाव क्या होंगे।यहाँ तक कि अपने शैक्षिक प्रमाणपत्र भी नहीं ले गयी।

जैसे ही पहुँची प्रिसिंपल के रूम में इंतजार करने को कहा गया। मैं वहाँ बैठी बैठी यूँ ही चारों तरफ देखने लगी। गाँव के प्राइवेट स्कूल के हिसाब से ठीक ठाक था। प्रिसिंपल के आने पर खड़ी हुई तो पतिदेव ने इशारा किया कि खड़ी क्यों हुई?

प्रिंसिपल ने सवाल पूछना शुरू किया.. .अब नौकरी की क्या जरुरत है ?क्या आपको लगता है कि आप बच्चों को हैण्डिल कर सकेंगी?अगर बच्चे उद्दण्डता करें तो आप कैसे उन्हें कंट्रोल करेंगी। फिर एजूकेशन पूछी। साथ ही ये सवाल कि अब इस उम्र में नौकरी की क्या जरुरत पड़ गयी?इस का उत्तर पति देव ने दिया ।फिर एक पेपर और पेन देते हुये उन्होंने एक सवाल पर संक्षिप्त निबंध लिखने को कहा ।कि क्या बच्चों को मारना सही है या गलत।

मैं ने पाँच मिनिट माँगे ।और तय समय में लिख कर दे दिया। जब वो उस निबंध को पढ़ रहे थे तब मेरी नजर उनके फेस को पढ़ रही थी।उम्मीद थी जाब मिल जायेगी।पर सत्र आधा व्यतीत हो चुका था तो शंका भी थी।उन्होंने निबंध पढ़ने के बाद कुछ देर मुझे गौर से देखा फिर बोले हम आपको सूचित कर देंगे।अपना न. नोट करवा दीजिए।शंका,आशंका के बीच निराश होकर लौट आई।दूसरे दिन ही खबर आ गयी ज्वाइन करने की । पर सैलरी मात्र 3000प्रति मासिक।पर आधे माह के 1500 । चलो कुछ तो शुरू हुआ। मेरे आने से वहाँ पढ़ा रहीं लड़कियों को शायद बुरा लगा।सब 18-20 की थी और स्वयं भी पढ़ रही थीं।

पहले मुझे उन के साथ क्लास शेयर करने को दी गयी। दो दिन में अपना काम बखूबी समझ कर मैंने मनोयोग से पढ़ाना शुरु किया।पाँचवे दिन सी जब प्रेयर के बाद मैं क्लास रूम ᴅसातवीं कक्षाᴇपहुँची तो मेरी सहयोगी न आई। मैंने पढ़ाना शुरु किया।दो पंक्ति ही समझा पाई थी कि तीन चार लड़कियाँ ᴅशिक्षिकाᴇ आई और उनमें से मोना नाम की टीचर ने बोला,ष्मैडम आप यहाँ मत पढ़ाइये।आप को एल. के. जी के बच्चों को पढ़ाना है। हटिये यहाँ से...!उसके शब्दों में इतना अपमान,हिकारत थी कि मेरे आँसू बह निकले।

काँपते गले से पूछा ,किसने कहा है?

प्रिंसिपल सर ने।

मैं कक्षा से बाहर निकली और एल के जी कक्षा में जाकर बैठ गयी।लेकिन चाहते हुये भी मेरे आँसू न रुके।

उधर से प्रिंसिपल गुजरे ।मुझे देख एक सेकंड रुके और निकल गये।मेरे मन में खटास आ चुकी थी।परिस्थितियाँ विपरीत थी और पैसा पहली प्रायोरिटी। दिमाग काम करना बंद कर चुका था। लंच ब्रेक में भी कक्षा से बाहर न निकली।वहीं बच्चों के बीच खुद को बहलाती रही।तभी बाई ने आकर कहा आपको सर बुला रहे हैं।

क्यों?

'बहन जी ,आप सबेरे से रो रहीं हैं ।ई हम सर को बताय दिये।'

'अरे , आपने ऐसा क्यों किया?'

"बहन जी आप ने चार दिन में जैसन हमाये

संग बर्ताव करो है ,ऐसन जे कोऊ न करतीं।ऐ ,ओ करके बात करती हैं।तो...।"

"कोई बात नहीं।

कह कर हम अपने चेहरे को रुमाल से साफ कर केअ,फिस पहुँचे।

"बैठिये।

जी सर ,मैं ठीक हूँ।आप ने बुलाया।ष्कहते कहते गला रूंध गया

"आप को कोई तकलीफ..।"

नहीं

फिर रोने का कारण ।

कोई खास बात नहीं सर ।बस जो बात आपको स्वयं कहनी चाहिये थी वह अन्य शिक्षिकायें क्लास रुम में ,स्टूडेंट के सामने गलत तरीके से कहें ...। मुझे उचित न लगा।

पूरी बात बताइये।

हमने पूरी बात उनको बता दी।एक सैंकंड मौन रह के बोले,"स्वारी। वो लोग प्रेयर के बाद आई थी मेरे पास ।तो हमने कहा था कि ठीक है वो न्यू हैं उन्हें छोटी क्लास दे देंगे।...पर यह नहीं मालुम था कि मेरे जानकारी के बिना यह करेंगे।गलत तो किया है उन्होंने।

खैर ..वैसे आपको एल के जी के बच्चों को पढ़ाने में कोई दिक्कत..?"

उनके इस बर्ताव से समझ गयी ।पर मजबूरी थी उस समय।

तो हम यह कह आ गये कि आप प्रिंसिपल हैं।सैलरी आप देंगे और काम मैं करूँगी।तो जो भी आदेश हो कृप्या आप दें ।अन्य शिक्षक नहीं जो उम्र और अनुभव में मुझसे छोटी हैं और स्वयं बी.ए या इंटर कर रही हैं।' बाकी का पूरा माह एल के जी के बच्चों के साथ ही निकाला। प्रेयर के बाद मैं सीधा अपनी कक्षा में आ जाती। सर ने बहुत कहा पर मैंने अन्य किसी के साथ कक्षा शेयर करने से मना कर दिया।बच्चे भी खुश थे।

महीने की आखिरी तारीख को सर ने आफिस में बुलाया ।सैलरी का लिफाफा देकर बोले , "मैम, थैंक्स ।आपने जो निबंध लिख कर दिया था पंद्रह दिन से आपकी चौंकिंग हो रही थी।आप खरी उतरीं।"

फिर उन्होंने मोना और बाकी दोनों शिक्षकों को देखा और कहा, ष्शायद अब समझ आ गया होगा कि ज्वाइन के साथ ही इनको पाँचवी से आठवीं कक्षा क्यों दी?"

सैलरी हाथ में आते ही समझ न पा रही थी कि हँसू या रोऊँ ।मात्र 1500/ रुपये थे पर पंद्रह दिन के तनाव और मेहनत के थे। जिनसे मेरे घर की व्यवस्थाये बननी शुरु होनी थी।

मनोरमा जैन पाखी

आजादी के मतवाले

हम आजादी के मतवाले
पैरों में ना बेड़ियां डाले
चाहे कोई भी हो तूफान
या, आ जाए आंधियों के थपेड़े
हम कहां रुकने वाले
हम आजादी के मतवाले
समुंदर की लहरों की तरह
हर फौजी का
खून भी उछाल मारे
सर पर कफन बांध
हम अपने घरों से निकल चले
हम आजादी के मतवाले
घात लगाए बैठा है वह
सरहद के उस पार
हम भी कहा झुकने वाले
हम आजादी के मतवाले

कंचन जायसवाल
नागपुर,महाराष्ट्र

साइलेंट शब्दों की ट्रेजडी

जिन लोगों ने अंग्रेजी पढ़ी है उन्होंने बहुत से अंग्रेजी शब्दों को लिखते हुए गच्चा जरूर खाया होगा। बड़ी विचित्र भाषा है अंग्रेजी, शब्द का उच्चारण किसी अक्षर का आभास देता है और स्पेलिंग की शुरुआत किसी ऐसे अक्षर से होती है जिसका उस शब्द से दूर-दूर का भी वास्ता नहीं होता। कहते हैं ये साइलेंट अक्षर है । जरा सा भी पता नहीं चलता कि "नो" "नी" या "नाइफ" की स्पेलिंग "क" से, "राइट", "रिस्ट" या रेस्लिंग की स्पेलिंग "डब्ल्यू" से और "आनर" या "आनेस्ट"की स्पेलिंग "एच" से शुरु होती है । यही नहीं बोलचाल के ऐसे कितने ही शब्द हैं जिनके कभी बीच में तो कभी अंत में कोई साइलेंट अक्षर आकर स्पेलिंग की बैण्ड बजा जाता है । व,क में "एल", साइन में "जी", कालम में "एन", डाउट में "बी" और नेम में "ई", स्पेलिंग के बीच या अंत में रोहिंग्याओं की तरह अवांछित घुसपैठ कर मजा किरकिरा कर देते हैं द्य स्पेलिंग का रट्टा न मारो तो गलत होने की शत-प्रतिशत गुंजाइश । रट्टा मारने के बावजूद न्यूमोनिया और साइकोल,जी की सही-सही स्पेलिंग लिख पाना आज भी चुनौती है । ये शब्द लिखने के लिए जब भी सामने आते हैं तो ष्राम लखन" का गीत "ओ राम जी बड़ा दु:ख दीना" याद आने लगता है।

साइलेंट अक्षरों के मामले में अपनी हिन्दी का कोई जवाब नहीं द्य कोई भी शब्द लिख लो, साइलेंट अक्षर का लफड़ा ही नहीं । पर यही बात बोलते हुए साइलेंट शब्दों के बारे में नहीं कह सकते । इस मामले में अंग्रेजी हिन्दी के आगे कहीं नहीं लगती । हमारे देश के लोग इतने चतुर सुजान हैं कि वे अपनी बातचीत में ऐसे-ऐसे शब्द या वाक्यांश ही साइलेंट कर देते हैं जिनका अर्थ वर्षो बाद समझ में आता है । बताते हैं रामधन काका की जब शादी हुई थी तो उनकी सासू माँ ने कहा था "हमारी बेटी गाय के समान है, ख्याल रखिए ।" ये तो काका को बाद में पता चला कि सासू माँ के वाक्य में दो-दो शब्द साइलेंट थे । उनके कहने का आशय था कि "हमारी बेटी "मरखनी" गाय के समान है, "अपना" ख्याल रखिएगा ।" इन साइलेंट शब्दों ने ऐसा गजब ढाया कि काका सांड सरीखे दो पुत्रों के पिता बन गए और ता उम्र कष्ट में रहे।

ये तो एक उदाहरण है । ऐसे कितने ही साइलेंट शब्दों से हमारा रोज पाला पड़ता है जिनका अर्थ बाद में समझ आता है । भगीरथ सब्जी वाले से जब भी मोलभाव करो तो वह बड़ी मासूमियत से कहता है कि "साब, आपको ज्यादा थोड़े ही लगाएँगे" और वह आधा किलो भिण्डी में डेढ़ सौ ग्राम रूढ़ी भिण्डी डेड़ गुने दाम में टिका जाता है । यह तो काफी समय बाद समझ में आया कि भगीरथ "चूना" शब्द को साइलेंट रखता था।

कुछ साल पहले एक नेता जी "गरीबी हटाआ" का नारा देते हुए वोट ले गए थे। गलती लोगों से हुई जो अपनी गरीबी हटने की उम्मीद लगा बैठे जबकि नेता जी ने कभी ऐसा वादा नहीं किया था, उन्होंने केवल "हमारी" शब्द को साइलेंट मोड में रखा था । इसी तरह पिछले दिनों "अच्छे दिन आएँगे"मामले में भी हुआ । लोगों ने फिर गलती से अच्छे दिनों के सपने देखने शुरु कर दिए । पिछली बार की तरह इस बार भी "हमारे"शब्द साइलेंट रखा गया था, ये लोगों को बाद में समझ में आया ।

छुट्टी के दिन देर तक सोने की इच्छा रखने वाले मित्रों को अपनी पत्नी का यह उलाहना जरूर याद होगा - "अजी उठो भी, क्या अभी तक पड़े हुए हो ।" आप मित्र हैं तो सोचा आपको बता दूँ । अब यदि कभी आपको यह उलाहना सुनने को मिले तो समझ जाइए कि "अभी तक" के बाद "भैंसे की तरह" वाक्यांश को साइलेंट मोड में रखा गया है ।

अरुण अर्णव खरे
डी 1/35 दानिश नगर भोपाल

जब उसने कुछ लिखा - सीमा रानी

स्नातकोत्तर कर रही थी तभी शिक्षिका के रूप में एक विद्यालय में भी अपना योगदान देना प्रारंभ कर चुकी थी। पढ़ाई के साथ अध्यापन कार्य कर रही थी तो स्वाभाविक है कि दोनों में संतुलन बनाना थोड़ा कठिन हो सकता था। किंतु कम उम्र और अनुभवहीन होने के कारण मुझे छोटे बच्चों को पढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बहुत बड़ा विद्यालय नहीं था और विद्यालय ग्रामीण परिवेश में था तो विद्यार्थियों की संख्या भी अधिक नहीं थी। उस विद्यालय में जब भी किसी नए बच्चे का नामांकन होता और यदि वह रोता तो उसे प्रधानाचार्य के अदेशानुसार मुझे ही सौंपा जाता था।

यह घटना ***2004*** की है। आसिफ नामक एक बच्चे का नामांकन हुआ। **4** साल का बच्चा ऐसे रो रहा था जैसे उसे विद्यालय नहीं किसी जेल में लाया गया हो। मुझसे कहा गया कि मेरी कक्षा आज कोई और शिक्षक संभाल लेंगे, मुझे उस बच्चे को संभालना है ।उस मासूम का हाथ पकड़कर मैंने उसे कहा कि "तुम चुप हो जाओ। चलो तुम्हारे घर चलते हैं। तुम्हें नहीं पढ़ना तो कोई बात नहीं।'' मेरी इस बात को सुनकर वो मुझे ऐसे देख रहा था जैसे मैं किसी तीसरी दुनिया की बात कर रही हूँ। वह खुशी-खुशी मेरे साथ कदम बढ़ाने लगा। फिर मैंने उसे कहा "आसिफ अभी तुम्हारे घर चलेंगे पर उससे पहले क्या तुम मेरे इस स्कूल को घूमकर देखना चाहोगे? यहाँ बहुत सारे छोटे बच्चे भी हैं। क्या उनसे मिलना चाहोगे , उनसे दोस्ती करोगे?" शायद उसे मेरी चालाकी समझ आ गई थी, फिर से वो रोते हुए बोला "मुझे पता है आप मुझे घर नहीं ले जाएँगी। मुझे बुद्धू बना रही हैं। मुझे नहीं पढ़ना, घर जाना है।" फिर मैंने उसकी बात को पकड़ते हुए कहा "तुम मत पढ़ो बिल्कुल मत पढ़ना पर एक बार मेरे साथ क्लास में तो चलो।" उसे थोड़ी तसल्ली हुई कि पढ़ना नहीं पड़ेगा। वह मेरे साथ चलता रहा । मैंने उसे विद्यालय में लगे हुए सुंदर-सुंदर फूल दिखाए । उसे झूले पर झुलाया, टाफी दी तब जाकर वह शांत हुआ। फिर उसे उसकी कक्षा में ले गई, सभी बच्चों से उसका परिचय करवाया। इतनी देर में वह सहज हो चुका था। उसके बाद आधी छुट्टी हो गई और सब बच्चों के साथ मिलकर आसिफ ने खाना खाया। उसके बाद फिर से मेरे पास आकर खड़ा हो गया। मैंने कहा कि अब अपने दोस्तों के साथ बैठो, थोड़ी देर में छुट्टी हो जाएगी फिर घर चले जाना। तो उसने बड़ी मासूमियत से कहा "नहीं मैं आपके साथ ही रहूँगा ।" फिर छुट्टी होने तक वह मेरे साथ ही मेरी हर कक्षा में घूमता रहा और छुट्टी होते ही खुशी-खुशी घर चला गया।

अगले दिन फिर आसिफ मेरे सामने था। मेरा पहला क्लासश उसकी कक्षा में ही था तो मेरे साथ ही वह कक्षा में चला गया। मेरे साथ होने के कारण जहाँ आसिफ गौरवान्वित अनुभव कर रहा था वहीं उसके सहपाठियों में ईर्ष्या का भाव भी पनप रहा था। सैम ने तो कह भी दिया "आसिफ तुम्हारी जगह इधर है, यहाँ बैठो।" मैंने भी उसका समर्थन करते हुए कहा "हा" सब अच्छे बच्चे अपनी -अपनी जगह पर बैठ जाओ। आसिफ भी जाकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। फिर एक-एक करके मैंने बच्चों को अपने पास बुलाकर ए, बी, सी, डी लिखने के लिए कहा। अंत में आसिफ की बारी आई और मैंने उसे भी बुलाया पर वह अपनी जगह से टस से मास नहीं हो रहा था। मैं जानती थी कि उसे कुछ लिखना नहीं आता इसलिए वह नहीं आ रहा है। फिर मैंने सभी बच्चों को संबोधित करते हुए कहा "बच्चों आप लोगों को याद है जब आप स्कूल में नए-नए आए थे तो आप लोगों को कुछ लिखना नहीं आता था। फिर धीरे धीरे आपने पेंसिल पकड़ना और लिखना सीखा।" सभी बच्चों ने हामी भरी । मैंने फिर कहा "आसिफ भी अभी नया-नया स्कूल में आया है और मुझे यकीन है वो आज जरूर "ए" लिखना सीख जाएगा। क्यों आसिफ सीखना है न? अब इधर आओ। इस बार हिम्मत जुटाकर वह मेरे पास आया। मैंने तीन-चार बार उसे बोर्ड पर "ए" लिखकर दिखाया फिर उसे लिखने के लिए कहा ।

आसिफ ने "ए" लिखा तो मैंने खुश होकर उसके लिए ताली बजाई और कक्षा के बच्चों ने भी तालियाँ बजाई। फिर तो आसिफ बार -बार 'ए' लिखने लगा और पल भार में वह आत्मविश्वास से भर उठा। उसकी सबसे दोस्ती भी हो गई। मैं उसे समझाकर दूसरी कक्षा में चली गई।

तीसरे दिन आसिफ के पिताजी मिठाई का डिब्बा लेकर स्कूल में आए। मुझे डिब्बा थमाते हुए मुझे शुक्रिया कह रहे थे। मैंने हैरान होते हुए कहा -"मिठाई किसलिए अभी तो उसने बस 'ए ' लिखना ही सीखा है। तो उन्होंने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया "ये उसके 'ए' लिखने के लिए नहीं है। अब वह स्कूल आना चाहता है, पढ़ना चाहता है। उसके अंदर जो आत्मविश्वास आया है, उसके व्यवहार में जो परिवर्तन आया है मैं इस बात से बहुत खुश हूँ और आभार प्रकट करने के लिए ये मिठाई आपके लिए और प्रधानाचार्य जी के लिए लाया हूँ।उस घटना को लगभग ६ साल हो गए पर जब भी मैं उस घटना को याद करती हूँ मेरे चेहरे पर स्वतः ही मुस्कान आ जाती है।

-सीमा रानी मिश्रा हिसार, हरियाणा

लव जेहाद

मुम्बई से बेवाक अलका पाण्डेंय

लव जेहाद के नाम पर आज कल हिंदू लड़कियों को शादी के नाम पर धर्म परिवर्तन करवाया जा रहा है वह हर शहर हर राज्य में हो रहा है । देखा जाये तो लव जिहाद अपने आप में सही शब्द नहीं है क्योंकि जहाँ जिहाद होता है वहाँ लव के लिये कोई जगह नहीं होती और जहाँ लव होता है वहां जिहाद की कोई जरूरत ही नहीं है। इस्लामिक धारणा के अनुसार जिहाद पवित्र शब्द हो सकता है लेकिन वर्तमान में जिहाद का मतलब मासूम और निर्दोष महिलाओं, पुरूषों और बच्चों का शोषण-उत्पीडन तथा बर्बर हत्याएँ करना ही है। दुनिया भर में इस्लाम फैलाने के लिये दनदनाते घूम रहे आतंकवादी मासूम लोगों की हत्याएं जिहाद के नाम पर ही कर रहे हैं। अमेरिका में हुआ लोन वुल्फ पर हमला करने वाला आतंकवादी अल्ला -हू-अकबर का नारा लगाकर मासूम बच्चों को अपने ट्रक से कुचल रहा था।

इसी जिहाद का एक हिस्सा है लव जिहाद। भारत में इसे हिंदू संगठनों का बेमतलब का हो हल्ला करार दिया जाता है जबकि सच यह है कि इससे कहीं पहले यूरोप में लड़कियों ने यह मामला उठाया है कि उन्हें गलत तरीके से फँसाकर शादियाँ की गई हैं और उसके बाद उनका जबरन धर्म-परिवर्तन किया गया है। अक्सर इसे हल्के में लिया जाता है और कहा जाता है कि ये कोरी बकवास है जबकि मेरा मानना है कि सच से आँखें चुराने से सच झूठ नहीं हो जाता है। लव-जिहाद एक ऐसा सच है जिससे इन्कार करना मूर्खता ही होगी लेकिन यह भी एक सच है कि हिंदू-मुस्लिम युवक और युवतियों के बीच होने वाले सारे प्रेम-विवाहों को लव-जिहाद का नाम नहीं दिया जा सकता। एक सच यह भी है कि कौन सा प्रेम विवाह लव-जिहाद नहीं है, इसकी पहचान करना भी मुश्किल है।

षड्यंत्र के तहत हिंदू लड़कियों को दूसरे समुदाय के युवकों द्वारा फंसाकर उनका शारीरिक शोषण किया जा रहा है। सरकार इन पर अंकुश लगाए।सरकार को कठीन कदम उठाना होगा । अभी हाई कोर्ट का एक फैसला आया है कि सिर्फ शादी के लिए धर्म परिवर्तन वैध नहीं है। सरकार लव जिहाद पर जल्द अंकुश लगाने जा रही । सरकार कह रही कि हम कानून बनाएंगे। उन लोगों को चेतावनी देना होगा जो पहचान छिपाते हैं और हमारी बहनों के सम्मान के साथ खेलते हैं। यदि आप सुधरते नहीं हैं तो आपकी राम नाम सत्य यात्रा निकलेगी।यह बात योगी जी ने भी कही है पर क्या इससे कुछ असर होगा!

लव जेहाद पर अंकुश पर समाज को भी सख़्त होना पड़ेगा ,लड़कियों को भी वे जल्दी किसी बहकावे में न आये , और अंजान लड़के से चैट, फेसबुक और कालेज और उसके बहार बातचीत न करें । अपने पर अंकुश लगाये,यदि कोई अधिक परेशान करता है तो घर पर खबर करे पुलिस की मददत रहे । हमें जागरुक होने की जरुरत है । माँ बाप को बेटियों को प्यार से समझाने की व अच्छे बुरे का फर्क बतलाने की जरुरत है ।

लव जिहाद का मुद्दा चर्चा में बना ही रहता है क्योंकि यह किसी राज्य, क्षेत्र या देश का मामला नहीं है बल्कि यह एक विश्वव्यापी मुद्दा है। जहाँ पर भी मुस्लिम समाज अल्पसंख्यक है वहाँ की बहुसंख्यक आबादी अक्सर यह आरोप लगाती रहती है कि मुस्लिम युवक हमारी बेटियों को बहकाकर विवाह कर लेते हैं, फिर उनका

धर्मपरिवर्तन करके उन्हें अपने धर्म में शामिल कर लेते हैं। जहाँ मुस्लिम बहुसंख्यक है वहाँ लव-जिहाद के मुद्दे को उठाने की हिम्मत कोई कर ही नहीं सकता इसलिये यह मुद्दा मुस्लिम अल्पसंख्यक आबादी वाले देशों का ही है।

काफी समय पहले मेरे कई परिचितों की बेटीयो के मुस्लिम लड़कों से शादी के मामले आये मैं लड़कियों को समझाया पर छोड़ो बहुत लम्बी कहानी है ।मुझे एक हिंदू लड़की के घर से भागने का समाचार मिला और बाद में पता लगा कि उसने किसी मुस्लिम युवक से शादी कर ली है। शादी के कुछ महीनों बाद लड़की अपने पति के साथ अपने परिवार से मिलने घर आई तो पता लगा कि वह पूरी तरह से बदल चुकी थी। उसने मुस्लिम धर्म अपना लिया था तथा बुरके में लिपटी हुई अपने घर आई थी। एक आधुनिक सोच वाली लड़की का इस तरह से बुरके में छुप जाना किसी को अच्छा नहीं लगा था लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा। बाद में लड़की किसी भी पारिवारिक समारोह में शामिल नहीं हुई, न ही उसे अकेला मायके में आने दिया गया। देखा जाये तो शादी के बाद न केवल धर्म बल्कि उससे उसका पूरा परिवार और समाज ही छीन लिया गया था। बड़ा अजीब लगता है यह सोचकर कि उस लड़की के पास नया परिवार तो था लेकिन पुराने सारे सम्बन्ध लगभग तोड़ दिये गये थे जबकि लड़कीवालों ने शादी को स्वीकार कर लिया था। इसे लव-जिहाद नहीं कहा जा सकता क्योंकि लड़की ने ऐसी कोई शिकायत अपने घर वालों से नहीं की थी लेकिन अब सवाल उठता है कि लड़की ही धर्म परिवर्तन क्यों करे। सारा झगड़ा इसी बात को लेकर है कि ऐसे मामलों में शादी के तुरन्त बाद लड़की का धर्म परिवर्तन करा दिया जाता है। चाहे यह धर्म परिवर्तन दबाव डालकर कराया जाता है लेकिन जब तक लड़की शिकायत नहीं करती, तब तक इसे कैसे साबित किया जा सकता है कि यह जबरन धर्म परिवर्तन का मामला है। लड़कियाँ बहुत कम मामलों में शिकायत करती है क्योंकि शादी के बाद जब वो पति का घर और नाम स्वीकार कर लेती है तो थोड़ी सी आनाकानी करने के बाद धर्म भी स्वीकार कर लेती है। लव जिहाद पर ज्यादा हल्ला तब मचाया जाता है जब लड़का अपना धर्म छुपाकर लड़की से शादी कर लेता है और बाद में अपना सच बताकर लड़की को धर्मपरिवर्तन के लिये मजबूर करता है। ऐसे कम ही मामले सामने आये हैं। ज्यादातर मामलों में लड़कियों को लड़को का धर्म पता होता है। मेरा मानना है कि हिंदू युवतियों को ऐसे प्रेम विवाहों में मुस्लिम युवकों से धर्मपरिवर्तन की शर्त रखनी चाहिये। अगर मुस्लिम युवक सच में इन लड़कियों से प्यार करते होंगे तो वो हिंदू धर्म स्वीकार कर लेंगे। अगर वो ऐसा करने से इन्कार करते हैं तो हिंदू लड़कियों को अपने प्रेम सम्बन्धों से किनारा कर लेना चाहिये।

मैने घोषणा की थी जो हिंदू लड़के लड़कियाँ मुस्लिम से शादी करेगे और मुस्लिम को हिंदू बनाकर तो अग्निशिखा मंच उन्हें सम्मानित करेगी । परन्तु हिंदू , मुस्लिम बन जाते है मुस्लिम हिंदू नही बनते है । मैं समझती हूँ इसका कारण समाज व परिवार है मुस्लिम समाज उन लड़कों का स्वागत करता है । और हिंदू समाज चिल्लाते जिससे बच्चे डरते है । और भाग कर शादी कर लेते है ।

हमें बदलने व प्यार से काम लेना चाहिये ।सबसे जरूरी बात यह है कि प्रेम में सारा त्याग महिलाओं से नहीं माँगा जाना चाहिये। यदि किसी हिंदू या मुस्लिम युवक को दूसरे धर्म की युवती से प्रेम होता है तो उसे अपना धर्म बदलकर युवती का धर्म स्वीकार करना चाहिये। तभी ये साबित हो पायेगा कि उसका प्रेम सच्चा है। सच्चा प्रेम त्याग नहीं माँगता बल्कि त्याग करता है। जब युवक अपना धर्म प्रेम के लिये छोडने की हिम्मत दिखायेंगे, तब पता चलेगा कि उनका समाज उनके साथ कैसा व्यवहार करता है ?लव जिहाद पर यदि उदाहरण देगे तो बहुत विस्तृत हो जायेगा।

समाप्त

असंतृप्त वसा भोजन का स्वास्थ्य पर प्रभाव

असंतृप्त वसा का स्वास्थ्य पर प्रभाव जानने से पूर्व यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि वसा किसे कहते हैं?वसा का साधारण शब्दों में अर्थ   भोजन से प्राप्त होने वाली चिकनाई से लगाया जाता है। जैसे घी, मक्खन, तेल आदि वसायुक्त भोज्य पदार्थ की श्रेणी में आते हैं। हम सब जानते हैं कि भोजन से हमें 5 पोषक तत्व प्राप्त होते हैं जैसे-

कार्बोहाइड्रेट
विटामिन
खनिज लवण
वसा
प्रोटीन आदि।

किंतु अक्सर देखा गया है कि अधिक वसा का सेवन करने से व्यक्ति अनेक बीमारियों का शिकार होने लगता है । वसा को स्वास्थ्य के लिए आवश्यक तत्व माना गया है, आँखों के लिए भी भी अंडा, घी, विटामिन ए से भरपूर पोषक तत्वों का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। किंतु यदि शारीरिक श्रम नहीं के बराबर होता है और बहुतायत में वसा शरीर को प्राप्त होती रहती है ,तो व्यक्ति अनेक असाध्य बीमारियों से घिरने लगता है। आइए जानते हैं असंतृप्त वसा का शरीर पर प्रभाव

1. गुर्दे प्रभावित होना - मोटापे के कारण गुर्दे के चारों ओर वसीय तंतुओं की मोटी परत जम जाती है। जिससे गुर्दे द्वारा होने वाले कार्यो में रुकावट आती है ।गुर्दा हमारे शरीर से निरूपयोगी पदार्थो का निष्कासन करता है। जैसे यूरिया, यूरिक अम्ल ,अमोनिया टक्सिन आदि। यदि गुर्दा अपना कार्य नहीं कर पाता है तो यह विषाक्त पदार्थ रक्त में ही रह जाते हैं। रक्त की छनन प्रक्रिया भी ठीक से नहीं हो पाती है जिससे अशुद्व पदार्थ रक्त में ही रह जाते हैं। अशुद्व रक्त शरीर के लिए जहरीला होता है ।गुर्दे काम करना छोड़ते ही मनुष्य की मृत्यु शीघ्र ही हो जाती है। वसा का सेवन एक निश्चित मात्रा में ही करें। अधिक वसा सेवन शरीर के लिए नुकसानदायक होता है।

2. कोलेस्ट्रोल बढ़ना - सामान्यतः रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा 120 से 160 उस होती है।इससे अधिक कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ने पर कोलेस्ट्र,ल रक्त धमनियों की आंतरिक दीवारों पर जमने लगता है। फल स्वरुप रक्त धमनियों की दीवारों संकरी होने लगती हैं। धीरे-धीरे की इन धमनियों की दीवारों पर इतना अधिक कोलेस्ट्रोल का जमाव हो जाता है, कि इनका लचीलापन भी समाप्त हो जाता है। इनका व्यास भी छोटा हो जाता है ।जिससे रक्त के बहाव की गति कम हो जाती है। और यही कारण है कि हृदयाघात की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

3. गुर्दे प्रभावित होना- आवश्यकता से अधिक वसायुक्त खाद्य पदार्थो का सेवन करने से शरीर में अधिक मात्रा में फैट बढ़ने लगता है। जिससे त्वचा के नीचे फेफड़े ,हृदय ,यकृत आदि अन्य कोमल अंग तथा शरीर के अन्य स्थानों पर वसा की मोटी परत जमने लगती है। जिससे गुर्दे प्रभावित होने लगते हैं।

4.मधुमेह होना- मधुमेह हालाँकि वंशानुगत रोग भी है। लेकिन फिर भी यह अधिक मोटे लोगों को जल्दी होता है। वसा और कार्बोज के अधिक सेवन से शरीर में अधिक मात्रा में ग्लूकोस का निर्माण होता है ।हमारे शरीर के रक्त में एक सीमा तक ही ग्लूकोज संग्रहित रहती है ।अतिरिक्त ग्लूकोस गलेकोजन में बदलने लगती है । तब इंसुलिन हार्मोन का स्राव अवरु) होने लगता है। फल स्वरुप मधुमेह हो जाता है।

5. मोटापा-- मोटापा जैसी बीमारी आधुनिक जीवन शैली की ही देन है। जिसमें शारीरिक श्रम का अभाव है ।और हम सब अपने कार्यस्थल पर घंटों बैठकर लगातार कंप्यूटर स्क्रीन की ओर टक टकी बांधे रहते हैं। जिससे शरीर में चर्बी जमने लगती है ।जिसे सामान्य भाषा में मोटापा कहा जाता है। मोटापा के शिकार व्यक्तियों को अपने दैनिक कार्यो को करने में भी परेशानी का अनुभव होने लगता है।

6. घुटनों और जोड़ों का दर्द-अधिक वसा का सेवन करने से मात्र मधुमेह, मोटापा, गुर्दे खराब होना जैसे रोग ही नहीं होते हैं, अपितु मोटापा अधिक बढ़ने के कारण घुटनों और जोड़ों में भी दर्द रहने लगता है। व्यक्ति को उठने- बैठने में भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। दिन प्रतिदिन वजन बढ़ने से घुटनों में वजन सहन करने की शक्ति क्षीण होने लगती है।

अतः हमें शरीर में असंतृप्त वसा को जमा नहीं होने देना चाहिए। सुबह को 1 घंटे योगा और रात को खाना खाने के बाद 1 घंटे टहलना अवश्य चाहिए।

क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।

प्रीति चौधरी "मनोरमा"
जनपद बुलन्दशहर
उत्तरप्रदेश

बताना छोड़ दिया

आज मैं थोड़ा थक सी गई हूं इसलिए सब से मिलना छोड़ दिया है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैंने अपनों को छोड़ दिया है अक्सर रिश्तो में अजीब सी दूरियां आ जाती है लेकिन ऐसा नहीं है कि मैंने अपनों के उन रिश्तो को छोड़ दिया है हां मैं मानती हूं कि मैं आज अकेला महसूस करती हूं अपनों की इस भीड़ में भी पर ऐसा नहीं कि मैंने अपनों से अपनापन छोड़ दिया है आज भी याद तो करती हूं मैं उन सभी को उनकी परवाह भी करती हूं उनकी याद कितना आती है कितना प्यार करती हु यह सब कुछ बताना छोड़ दिया है बस थोड़ा थक सी गई हूं सब की जली कटी बातों को सुन सुनकर इसलिए ज्यादा बोलना छोड़ दिया है पर इसका मतलब यह नहीं कि मैंने रिश्ते निभाना छोड़ दिया है अब मैं सुकून से जीना चाहती हूं रोकर नहीं हंसकर कुछ पल जीना चाहती हूं इसलिए अपनों से नहीं गैरों से रिश्ता जोड़ लिया है मुझे जो दर्द दे उनका दामन छोड़ दिया है मैंने आज उन सब को अपना कहना छोड़ दिया है।

नेहा शर्मा
विदिशा
मध्यप्रदेश

-मीना अरोड़ा

अहम् ब्रह्म अस्मि

अनेक बार इस वाक्य पर बैठ मैंने इतराया।मेरे इतराने में ऐंठन की अधिकता ने मुझसे मेरा लचीलापन छीन लिया ,शरीर की ऐंठन ने जिह्वा को नहीं बक्शा, बस चढ़ सवार हुई उस पर ,अब जैसे ही मुख ने क्रिया-कलाप आरंभ किया, जीभ ने ऐंठ कर कहा "मैं तेरे बस की नहीं रही, तू जा, जाकर अपने पर पुत्ती कालिख उतार "।जिह्वा के कथन पर मुख अचंभित था। क्योंकि उसे स्वयं पर लगी कालिख का तनिक भी आभास न था।मुख ने जिह्वा की बात से विमुख हो अपनी ग्रीवा को नीचे झुकाकर कुछ सोचने की चेष्टा मात्र की, पर "कड़क" ,"कड़क" की कर्कश ध्वनि कर्णो में प्रदीप्त हुई।मुझे यह जानकर घोर आश्चर्य हुआ कि जीभ से अधिक ऐंठन ग्रीवा के पास थी।

मन चिन्तन के बजाय चिन्ता में उलझ गया कि मेरे ब्रह्म स्वरूप की खबर बस जमाने को नहीं हालांकि मेरा हर अंग गवाही दे रहा है, कि वो तुच्छ मानव जाति के सड़े बदबूदार जीवन से कहीं ऊपर किसी ओर लोक में जी रहा है। अंगों का गुरुर तो उस शून्य को छू रहा है जिसे लोग आकाश कहते हैं। शून्य को आ.. काश कहने वाले अवश्य यही सोच कर कह पाये होगें "काश शून्य आ मुट्ठी में समा जाये"। मेरे विवेकशील मस्तिष्क ने कहा "जिस शून्य को गुणीजन मुट्ठी में नहीं समेट पाये, उसे लपेटे तुम कितनी आसानी से मृत्युलोक में विचर रही हो, क्योकि तुम ही तो साक्षात ब्रह्म हा"।

"एक तो सैयां बावरे, ता पे खायी भांग" जैसी लोकोक्ति बिजली की भांति मुझको छूकर गुजरी मैंने आवेश में सर को झटका। उसने मेरी मेहनत को व्यर्थ नहीं जाने दिया,अपने को पास की दीवार के करीब ले गया, अब सिर पर छोटा सा अपना खुद का एक सिर और था। अपने ऊपर नयी बढ़ोतरी देख मुझे कुछ- कुछ मानवपन का एहसास हुआ, फिर सोचा श्चलो, अगर ज्ञान सीमा से अधिक हुआ तो कुछ इस हिस्से में भी भरा जा सकता है। मेरे प्रगतिशील विचारों पर नेत्र विस्मय से अपनी निर्धारित सीमा से बाहर छलांग लगाने को तैयार थे। मैंने उन्हें अन्दर को धकेलते हुए कहा "अभी तुमने देखा ही क्या है?

अब तक शांत रह सब देखने वाले नेत्र बिफर कर बोले "क्या देखना शेष है? बताओ क्या नहीं देखा ? तुम जैसे मूर्खो को रोज ब्रह्मा बनते हुये देखा है। हर शहर की गली, नुक्कड़, बस्ती, गाँव, नगर, महानगर सब जगह देखा है।तुम जैसे आत्ममोह से ग्रसित हर उस पाखंडी को देखा है जो ये सोचकर अपने घिनौने कार्य करता है कि उसे कोई नहीं देख रहा, पर सच यह है कि उन्हें बाह्य रंगीनियों से भरे आवरण दिखाते समय हम उसे, उसके अंदर से देख रहे होते हैं। वो सभी प्रकार का पाखंड करने वाले रंगीन दुनिया में मृग की भांति कुलाचे मार, अपनी ओर दूसरों को आकर्षित करने, तथा कस्तूरी को सूंघ कर खोजने के बहाने दूसरों की गन्दगी में नाक घुसेड़ रहे होते हैं। कुछ तो घसियारों से घास पा अपनी क्षुधा शांत करने में जुट जाते हैं। और कुछ अधिक पाने की होड़ में दूर तक निकल जाते हैं। हम नेत्र उस व्याघ्र को भी देख रहे होते हैं जो बिना व्याग्रता दिखाये उन पर नजर टिकाये रखता है और सही समय आते ही एक एक कर सभी हिरन व्याघ्र का निवाला बन जाते हैं।

सच तो यह है कि अगर कोई व्याघ्र न भी हो तो काल- चक्र से कभी कोई नहीं जीत पाया।माया से निर्मित स्वर्ण- खाल लपेटे

खोखला निरीह पशु जो भीतर से तो हर क्षण डरता है,परंतु बाहरी रावणों का सान्निध्य पा खुद को बलशाली समझ मृत्यु को चुनौती देने के लिये, अपने “मैं” को लिये इधर -उधर भ्रमित सा विचरता है।नेत्रों के पास विद्यमान ज्ञान की पराकाष्ठा का अनुमान लगाना किसी ब्रह्म ज्ञानी के लिये भी चुनौती का विषय हो सकता है, पर वो कौन लोग होते हैं जो नेत्रों का उपयोग किये बिना सब जान लेते हैं, जैसे “जो बीत गयी, बीतेगी, या बीतने वाली है”।क्या यह रहस्य कोई और बतायेगा?

दोनों नेत्रों के ऊपरी उठे भाग ने क्रोध से अपने पर रेखांकित रेखाओं को आड़ा-टेढ़ा कर मेरा ध्यान अपनी ओर यह कह आकर्षित किया कि श्रम पर ही उदय होती है ब्रह्मज्ञानी बनने की प्रक्रिया, अर्थात् “अहम् ब्रह्म अस्मि”। शरीर का हर पुर्जा ब्रह्म होने को होड़ में लगा था। पर उसकी इस बात में लेशमात्र संदेह नहीं किया जा सकता। मस्तक तो पूरे तन का मुख्य अग्र भाग है अगर यह नहीं होगा तो टीका- तिलक कहाँ सुसज्जित होगा? टोपी कहाँ टिकेगी?और अगर यह गर्वीला नहीं हुआ तो दूसरे अपना माथा इसके समक्ष फोड़ने क्यों आयेंगे?ग्रीवा के पिछले हिस्से ने आगे को हिल समर्थन देते हुए कहा “सत्य है कबूल लो ”।

अभी कबूलनामे पर ठीक से मोहर नहीं लगी थी कि किसी ने कपाल के पिछले हिस्से पर जोर से ठोक दिया।बिना देर लगाये आगे का मस्तक अपने ही चरणों की ओर झुक गया।चरण-पादुकायें चहक उठी श्हर दम्भी का दम्भ हम तक पहुँच खत्म हो जाता हैश। जो हम तक नहीं पहुँचता, उसके मुख और कपाल तक हम पहुँच जाती हैं ।अच्छे अच्छे हमसे घबराते हैं। जो ताकत हमारे पास है वो अन्य किसी हथियार के पास नहीं अर्थात् “अहम् ब्रह्म अस्मि”।

मीना अरोड़ा
हल्द्वानी

चंद्रलोक

चंद्रलोक से आयी कोई हूर नही हूँ ।
परीलोक से आयी कोई नूर नहीं हूँ ।।
बाबुल के आँगन से आई सामान्य बालिका हूँ।
अपने पति के आशियाने की एकमात्र मल्लिका हूँ।।
मेरा पति मेरा नाज, मेरा पति मेरा ठाठ।
उनके सलामती को मैं हर दिन करूँ पूजा पाठ ।।
लाल चुनरी, हाथ चूड़ा - मेहँदी, पैर महावर।
सोलहो शृंगार कर, करवा चौथ मनाती हूँ।।
सलामत रहे सुहाग, स्वस्थ और खुशहाल।
इसलिए प्रत्येक वर्ष करवा चौथ मनाती हूँ।।
चाँद, रखे छलनी के चाँद को खुश हाल।
इसलिए छलनी से चाँद देख प्यास बुझाती हूँ।।
सितारों संग रहने वाले चाँद आज जल्दी आना।
अर्घ दिला कर मेरे पति के संग मेरी प्यास बुझाना ।

-अनुभा वर्मा, पटना

सुन्दरकांड

डा0 श्रीराम सिंह

इसके अनन्तर गोस्वामीजी अपनी पात्रता का वर्णन करते हुए कहते हैं- ''हे राम ! मैं सत्य कहता हूँ कि मेरे हृदय में अन्य कोई इच्छा नहीं है। आप सबकी अन्तरात्मा है अतः आप सबके हृदय की बात जानते हैं। हे रघुकुल श्रेष्ठ ! आप मुझे अपनी पूर्ण भक्ति प्रदान कीजिए। आप मेरे मानस को कामादि दोषों से रहित कीजिए-

''नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये।सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुगंव निर्भरां मे। कामादिदोषरहितं कुरू मानसं च।।''

पूर्ण भक्ति के आविर्भाव के लिए यह आवश्यक है कि हृदय कामनाओं से रहित हो। मन जीवनपर्यन्त कामनाओं से रहित नहीं होता है। जब मन, प्राण, शरीर, धन आदि को भगवान को अर्पित कर दिया जाता है तब समस्त कामनायें उदित होकर भी परमार्थ के अधीन ओर उसके साधन बन जाती है। परमार्थकामना में सब कामनायें साधनभूत होती हैं। मन से अतीत अवस्था ढ्ढउन्मनीभावढ्ढ में आत्मा परमात्मा में लीन होकर अमृतपान करती है और धन्य हो जाती है। यह नाम की सर्वोत्तम अवस्था है जिसमें नामामृत का पान होता है। यहाँ राम और नाम का तादात्म्य हो जाता है।

परम संत गोस्वामी जी रामभक्तों और ज्ञानियों में अग्रगण्य हनुमान का उल्लेख करते हुए कहते हैं- अतुलनीय बल वाले, सुमेरू पर्वत के समान कान्तियुक्त शरीर वाले, राक्षसरूपी वन को नष्ट करने के लिए अग्नि के समान, ज्ञानियों में अग्रगण्य, समस्त गुणों से परिपूर्ण, वानरों के स्वामी, भगवान् राम के प्रिय भक्त पवनपुत्र हनुमान् को मैं प्रणाम करता हूँ-

''अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेह,दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।''

श्रेष्ठ संत के लिए मानस के आरम्भ में संत का लक्षण बताते हुए गोस्वामी जी ने भक्ति, ज्ञान और कर्म का समन्वय आवश्यक बताया है। वे परमसंत में रामभक्ति, ब्रह्मज्ञान और कलिमल को हरने वाली विधिनिषेधमयी कर्मकथा को आवश्यक मानते हैं-

''रामभक्ति जहं सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा।।
विधिनिषेधमय कलिमलहरनी। करमकथा रबिनन्दिनि बरनी।।

परमसंत बनने के लिए परमसंत का ध्यान आवश्यक है। उपर्युक्त श्लोक में हनुमान में भक्ति, ज्ञान और कर्म का समन्वय और समस्त गुण बताये गये हैं। उत्तरकाण्ड के अन्त में बताया गया है कि ऐसे परम संत दुर्लभ है। गोस्वामी जी कहते है- ''वेदों में परमार्थ के जितने साधन बताये गये है, सबका फल भगवान की भक्ति है। वेदों में प्रतिपादित रामभक्ति को कोई बिरला ही राम कृपा से प्राप्त करता है। मनुष्य मुनिदुर्लभ भक्ति को अनायास ही पा जाता है।

''जहं लगि साधन वेद बखानी।सब कर फल हरि भगति भवानी।।
सो रघुनाथ भगति श्रुति गायी। रामकृपा काहू एक पायी।। सुनकर हनुमान पूर्ण

प्रेम में निमग्न हो गये-

''आसिष दीन्हि राम प्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना।।
अजर अमर गुननिधि सुत होहू।करहुं बहुत रघुनायक छोहू।।
करहुं कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना।।

हनुमान् अन्तिम आशीर्वाद 'भगवान तुम पर कृपा करे' से पूर्ण आनन्द और प्रेम में निमग्न हो गये। राम कृपा से कोई बिरला व्यक्ति हरिभक्ति को प्राप्त करता है। ‹राम कृपा काहू एक पाई› उत्तरकाण्ड की यह उक्ति हनुमान् पर चरितार्थ होती है। वे इसी कोटि के अद्वितीय भक्त हैं।

सुग्रीव ने राज्य प्राप्ति के लिए मित्रता की थी। बालि ने सुग्रीव की पत्नी को अपनी पत्नी बनाया। विभीषण के मन में राज्यप्राप्ति की इच्छा थी, अतः राम ने उन्हें तिलक लगाया। सुग्रीव और विभीषण ने क्रमशः विश्वसुन्दरी तारा और मन्दोदरी को अपनी पत्नी बनाया। गोस्वामी जी ने इन्हीं तथ्यों का उल्लेख करते हुए कहा है-

''जेहि अघ बधेहु ब्याध जिमि बाली। पुनि सुकण्ठ सोइ कीन्ह कुचाली।।
सोइ करतूत विभीषन केरी। सपनेहु सोउ न राम हिय हेरी।।

इस कारण से इन्हें परम भक्त की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। सुन्दरकाण्ड में सत्संग का महत्व बताते हुए कहा गया है- ''हे तात! स्वर्ग ओर मोक्ष के सुख को तराजू के एक पलड़े में रखा जाय, वे सब मिलकर भी ‹दूसरे पलड़े में रखे हुए› उस सुख के बराबर नहीं है जो क्षणमात्र के सत्सग्ङ से होता है''-

''तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्सग्ङ।।

लंकिनी हनुमान से कहती है- ''जिस पर राम कृपा करके देखते हैं, उसके लिए विष अमृत हो जाता है, शत्रु मिल हो जाते हैं, समुद्र गोखुर के समान हो जाता है और अग्नि में शीतलता आ जाती है। पर्वत धूल के समान हो जाता है''-

''गरल सुधा रिपु करइ मिताई। गोपद सिन्धु अनल सितलाई।।
गरूड़ सुमेरू रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवां जाहीं।।

विभीषण अपने दोषों का कारण तामस शरीर ‹राक्षसी शरीर› मानते हैं और कहते हैं कि भगवान मुझे अनाथ जानकर कब कृपा करें ?अब मुझे भरोसा हो गया है कि हरिकृपा के बिना संत नहीं मिलते हैं-

''तात कबहुं मोहि जानि अनाथा। करहहिं कृपा भानुकुल नाथा।।
तामस तनु कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं।।
अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरिकृपा मिलहिं नहि संता।।

हनुमान् राम का संदेश सीता से कहते हैं कि मेरे और तुम्हारे प्रेम का तत्व मेरा मन ही जानता है और वह मन सदा तेरे पास ही रहता है। प्रीति का सार बस इतने में ही समझ लें-

''तत्व प्रेम कर मम अरू तोरा। जानत प्रिया एक मन मोरा।।
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं।।

राम कहते है कि शरणागत व्यक्ति का भय दूर करना मेरा व्रत है। विभीषण कहते हैं कि जब तक निष्काम भाव से भजन नहीं होता है, तब तक काम, क्रोध आदि शत्रु नहीं भागते हैं।

राम शरणागत का महत्व बताते हुए कहते हैं- ''चराचर से द्रोह रखने वला मनुष्य भी यदि मेरी शरण में आ जाय तो मैं उसे साधु बना लेता हूँ। संसार के प्रति प्रेम को मुझमें स्थापित कर लेना चाहिए। तुम जैसे संत मुझे प्रिय हैं।'' राम ने लंका के राज्य की प्राप्ति के लिए उन्हें तिलक लगाया जो विभीषण की राज्य प्राप्ति की इच्छा का द्योतक है। अतः तुलसीदास के राम सबके हृदय की बात समझने वाले, दयालु एवं सहृदय है।

मुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं बिनहिं प्रयास।
जे यह कथा निरन्तर सुनहिं मान बिस्वास।।

साधना की उच्च अवस्था में प्रयास नहीं करना पड़ता है क्योंकि जीवन सहज ही परमार्थ के अमृत का आस्वादन करता है। इसी कारण से गोस्वामीजी ने इस साधना को अनायास द्धबिनहि प्रयासऋ बताया है। हनुमान् इसी कोटि के संत हैं।

सुरसा के सन्दर्भ में हनुमान् की अणिमा, महिमा आदि सिद्धियों का ज्ञान होता है। यह उनके योगाभ्यास का परिचायक है। रामचरितमानस में उनके योगाभ्यास का कहीं कोई वर्णन नहीं मिलता है। हनुमान् सीता को खोजते हुए अशोक बन में गये। राम का संदेश पाकर सीता अत्यन्त प्रसन्न हुई और राम का प्रिय जानकर हनुमान् को आर्शीवाद दिया- हे तात ! तुम बल और शील के निधान बनो। हे पुत्र ! तुम अजर (जरावस्था से रहित) अमर (मृत्यु से रहित), गुणों की निधि हो जाओं और भगवान तुम पर बहुत कृपा करे। ''भगवान राम तुम पर कृपा करे'' यह सुनकर हनुमान पूर्ण प्रेम में निमग्न हो गये-

''आसिष दीन्हि राम प्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना।।
अजर अमर गुननिधि सुत होहू।करहुं बहुत रघुनायक छोहू।।
करहुं कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना।।

हनुमान् अन्तिम आशीर्वाद 'भगवान तुम पर कृपा करे' से पूर्ण आनन्द और प्रेम में निमग्न हो गये। राम कृपा से कोई बिरला व्यक्ति हरिभक्ति को प्राप्त करता है। द्धराम कृपा काहू एक पाईऋ उत्तरकाण्ड की यह उक्ति हनुमान् पर चरितार्थ होती है। वे इसी कोटि के अद्वितीय भक्त हैं।

सुग्रीव ने राज्य प्राप्ति के लिए मित्रता की थी। बालि ने सुग्रीव की पत्नी को अपनी पत्नी बनाया। विभीषण के मन में राज्यप्राप्ति की इच्छा थी, अतः राम ने उन्हें तिलक लगाया। सुग्रीव और विभीषण ने क्रमशः विश्वसुन्दरी तारा और मन्दोदरी को अपनी पत्नी बनाया। गोस्वामी जी ने इन्हीं तथ्यों का उल्लेख करते हुए कहा है-

''जेहि अघ बधेहु ब्याध जिमि बाली। पुनि सुकण्ठ सोइ कीन्ह कुचाली।।
सोइ करतूत विभीषन केरी। सपनेहु सोउ न राम हिय हेरी।।

इस कारण से इन्हें परम भक्त की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। सुन्दरकाण्ड में सत्संग का महत्व बताते हुए कहा गया है- ''हे तात! स्वर्ग ओर मोक्ष के सुख को तराजू के एक पलड़े में रखा जाय, वे सब मिलकर भी द्धदूसरे पलड़े में रखे हुएऋ उस सुख के बराबर नहीं है जो क्षणमात्र के सत्सग्ङ से होता है''-

''तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्सग्ङ।।

लंकिनी हनुमान से कहती है- ''जिस पर राम कृपा करके देखते हैं, उसके लिए विष अमृत हो जाता है, शत्रु मिल हो जाते हैं, समुद्र गोखुर के समान हो जाता है और अग्नि में शीतलता

आ जाती है। पर्वत धूल के समान हो जाता है''-

''गरल सुधा रिपु करइ मिताई। गोपद सिन्धु अनल सितलाई।।

गरूड़ सुमेरू रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवां जाहीं।।

विभीषण अपने दोषों का कारण तामस शरीर ह्नराक्षसी शरीरऋ मानते हैं और कहते हैं कि भगवान मुझे अनाथ जानकर कब कृपा करें ?अब मुझे भरोसा हो गया है कि हरिकृपा के बिना संत नहीं मिलते हैं-

''तात कबहुं मोहि जानि अनाथा। करहहिं कृपा भानुकुल नाथा।।

तामस तनु कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं।।

अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरिकृपा मिलहिं नहि संता।।

हनुमान् राम का संदेश सीता से कहते हैं कि मेरे और तुम्हारे प्रेम का तत्व मेरा मन ही जानता है और वह मन सदा तेरे पास ही रहता है। प्रीति का सार बस इतने में ही समझ लें-

''तत्व प्रेम कर मम अरू तोरा। जानत प्रिया एक मन मोरा।।

सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं।।

राम कहते है कि शरणागत व्यक्ति का भय दूर करना मेरा व्रत है। विभीषण कहते हैं कि जब तक निष्काम भाव से भजन नहीं होता है, तब तक काम, क्रोध आदि शत्रु नहीं भागते हैं। राम शरणागत का महत्व बताते हुए कहते हैं- ''चराचर से द्रोह रखने वला मनुष्य भी यदि मेरी शरण में आ जाय तो मैं उसे साधु बना लेता हूँ। संसार के प्रति प्रेम को मुझमें स्थापित कर लेना चाहिए। तुम जैसे संत मुझे प्रिय हैं।'' राम ने लंका के राज्य की प्राप्ति के लिए उन्हें तिलक लगाया जो विभीषण की राज्य प्राप्ति की इच्छा का द्योतक है। अतः तुलसीदास के राम सबके हृदय की बात समझने वाले, दयालु एवं सहृदय है।

प्यार की चाहत

आंखों में सपनों की आहट
उमंग भरे दिल में प्यार की चाहत
प्रिय को देखे बिना
बावरे मन को मिलती ना राहत
सांसो में महक चंदन सी
आंखों में चमक चपला-सी
मुखड़े पर दमक चांद सी
छुप -छुप कर देखने की ललक
प्रिय केवल तुम्हारी एक झलक
नयन निहारना चाहे तुम्हें अपलक
नजर मिलते ही नजर चुराना
राज फिर तुम ही से ही छुपाना
चाहत का अंदाज है पुराना
झील -सी आंखों में गहराई तक
डूबना
दिल में खुशी के कमल खिलना
अक्सर दर्पण में सजना -संवरना
कभी उलझी लटों को सुलझाना
-बिखराना
प्यार की चाहत का मिजाज
मस्ताना
हृदय में झूमता आया मौसम
सुहाना

निरुपमा त्रिवेदी,इंदौर

व्यंग्य -डॉ नीरज सुधांश बिजनौर

साहित्यकार बनिए

नींद हमारे नयनों संग लुकाछिपी का खेल खेल रही थी और हमारे कजरारे नैन हर बार हार जाते थे। जो हमारे लिए असहनीय था। समझ में नहीं आ रहा था क्या करें। हाथ-मुंह धोकर सोने का नुस्खा भी फेल हो गया। फिर एक सहृदय मित्र ने एक्यूप्रेशर प)ति से पैरों को सहलाने की हिदायत दी। पर वह भी काम न आई। जब व्यक्ति चारों तरफ से हार जाता है तो ईश्वर ही बचते हैं, सहारे के लिए। अचानक दादी माँ की बातें आकाशवाणी की मानिंद हमारे कर्णकुहर के रास्ते कर्णपटल से जा टकराई कि बेटा नींद न आए तो गायत्रीमंत्र का जाप करना, लाभ होगा।

हमने दादी माँ की आज्ञा सविनय शिरोधार्य की व सफलता भी हासिल कर ली। किन्तु एक लेखक को नींद में भी चैन कहाँ। बड़ा ही बेचैन प्राणी है यह!

अचानक हमने देखा एक सज्जन बड़े ही शान-औ-शौकत के साथ अवतरित हो रहे हैं। हमने कहा-"महोदय! क्षमा कीजिएगा, आपका परिचय? "

सज्जन ने बड़े ही विनम्र भाव से हाथ जोड़कर अभिवादन किया व अर्ज़ किया, ''हम साहित्यकारों की जमात से तशरीफ लाए हैं। आपके दर्शन का मन हुआ सो बेधड़क चले आए। हम तो वैसे भी बिरादर भाई ही हैं।''

उनके इस वक्तव्य पर हम चौंके किन्तु अगले ही क्षण बिरादरी का अर्थ हमारी समझ में आ गया। वैसे भी आजकल इस जमात के चर्चे हर जुबान पर हैं।

हमने उनकी आवभगत करते हुए आने का कारण प्रयोजन पूछा। वे संयत स्वर में बोले, "मित्रवर! हरितक्रांति व श्वेतक्रांति के बाद हम साहित्यक्रांति के युग में प्रवेश कर चुके हैं। आपसे सहयोग की अपेक्षा है।"

हम तन व मन से आपके साथ हैं, हमने कहा। परंतु बिना धन के तन व मन का आचार डालना असंभव है, उन्होंने ताकीद की।

'सुना था कुछ वर्षो पूर्व तक साहित्यकार फक्कड़ हुआ करते थे। अपनी स्वयं की सकल जमापूँजी(जो कभी जमा ही नहीं हो पाती थी, साहित्य-साधना में होम कर दिया करते थे। फिर भी साहित्य के नाम पर भिक्षावृत्ति से सदैव दूर ही रहा करते थे। उन्हें पेट-पूजा से अधिक आनंद साहित्य पूजा में आता था। वे समझाने की मुद्रा में बोले, क्या आप नहीं जानते भूखे भजन न होई गोपाला। जहाँ तक उनका सवाल है, बड़े नादान थे वे लोग। वे क्या जानें कैसी होती है साहित्य साधना। आपकी तरह यदि वे आज होते तो देखते कि साहित्य-साधना की प्राचीन प)ति का हमने कैसा मॉर्डनाइज़ेशन कर डाला है। उन फक्कड़ों का वास्ता हमसे नहीं पड़ा वरना जान जाते कि कम-से-कम एक अदद कार के बिना तो साहित्य ही अधूरा है।

अब आप ही बताइए इस व्यवसायीकरण के युग में हम विलक्षण दूरदृष्टि न रखें तो साहित्य बेचारा तो पिछड़ ही जाएगा व्यवसायीकरण की दौड़ में। हमें तो भई ये क़तई मंजूर नहीं।

आज कोई भी क्षेत्र व्यवसायीकरण की मार से अछूता नहीं बचा है। चिकित्सा जैसा सेवाकार्य तक इसके अंतर्गत समाविष्ट है तो हम किस खेत की मूली! एक हाथ सेवा करो दूसरे हाथ पैसा लो। पाठकों का मनोरंजन करो व कीमत वसूलो। मनोरंजन कर की तर्ज़ पर रायल्टी पर टैक्स नहीं देना पड़ता क्या? किसी सरकार का दिल पसीज जाए तो थोड़ी बहुत

रियायत भले ही मिल जाए, अन्यथा हैं तो हम भी साहित्यकार बनिए। बस नेता नाम का प्राणी बचा है जिसे संसद के अखाड़े में भरपूर ता...ता थैया द्वारा मनोरंजन करने के बावजूद, सरकारी संपत्ति के नुकसान के बावजूद भी कोई टैक्स नहीं देना पड़ता।'

हमने अगला प्रश्न दागा, "आजकल तो गली मोहल्ले में अनेकों स्वयंभू साहित्यकार बरसाती मेंढ़कों की तर्ज़ पर फुदक रहे हैं। आपके पास है भला कोई तराजू जो इन मेंढ़कों के हुनर को तोल सके?"

"अवश्य-अवश्य! हमारे पास हर मर्ज़ की दवा है। घटिया लेखन को बढ़िया बनाना ही तो है हमारा काम है" वे सगर्व बतला रहे थे। "भई देखो! पहले तो मुखपृष्ठ पर ही नज़र पड़ती है ना! फर्स्ट इम्प्रेशन इज़ द लास्ट इम्प्रेशन। आवरण सुंदर होगा तो अंदर का माल भी सुंदर ही होगा न! दिखावट का ज़माना है। जानते हैं पॉम्प एंड शो! अंदर भले ही खोखला हो बाहर का ताम-झाम मस्त आकर्षक होना चाहिए। घटिया माल तो वैसे भी ग़रीब जनता की पहली पसंद होता है। हल्का-फुल्का लिखो जो अर्धशिक्षित जनता के भेजे में आसानी से समा सके।"

वे तो भ्रम पैदा करने में माहिर निकले। आश्चर्य हो रहा था कि नोबेल पुरस्कार चयनकर्ताओं की नज़रें उन पर अब तक क्यों नहीं पड़ीं। बनियागर्दी में नोबेल पुरस्कार के वे प्रबल दावेदार हैं। इनका लाभ-हानि का तराजू सदैव मुस्तैद रहता है। लाभ का पलड़ा सदैव भारी रखना इनकी विशेषता है- फिर साहित्य जाए भाड़ की भठ्ठी में, इनकी बला से।

हमने फिर अचरज से पूछा, "पूर्व साहित्यकार तो सनातन सत्य कह गए हैं कि लेखन स्वांतः सुखाय होना चाहिए।"

उन्होंने उसी संयत स्वर में उत्तर दिया, "हम भी तो यही कह रहे हैं। स्वांतः सुखाय वही तो होगा जो तन-मन दोनों को सुख पहुँचाए। आज के कमरतोड़ महंगाई के युग में सुख मिलता है धन से। धन नहीं तो कार नहीं, कार नहीं तो साहित्यकार नहीं! साहित्यकार क्या खाद्येन्द्रिय से रहित प्राणी है? वह अपनी खाद्येन्द्रिय के पोषण हेतु धनार्जन नहीं करेगा तो भूखे रहकर जीएगा कैसे?जीएगा नहीं तो लिखेगा क्या खाक़! ये सभी परस्पर पू...रक हैं। हमारा तो उसूल है भैया... जिस पत्रिका में मिले हमको पैसा नहीं, उस पत्रिका के लिए कुछ भी लिखना नहीं।"

उन्होंने बड़ी ही शान से उस घटना का ज़िक्र किया, जिसमें एक नई-नई पत्रिका के संपादक महोदय ने इन जनाब से पत्रिका के लिए आशीर्वचन स्वरूप कुछ लिख भेजने का आग्रह किया, इन्होंने उत्तर दिया पुष्प व पल्लव पहुँचा दीजिए, आशीर्वचन भी पहुँच जाएँगे।

हमें लगा ये बाज़ार के बनिए क्या तेल बेचेंगे इन महानुभाव के समक्ष! कोई वस्तु फ्री में देना इनकी फितरत नहीं, फिर चाहे वह आशीर्वाद ही क्यों न हों। हमें विश्वास हो गया कि अवश्य इनमें किसी बनिए व भड़भूजे की हाइब्रीड आत्मा विचर रही होगी क्योंकि भाड़ झोंकने व चने भुनाकर बेचने में इनका कोई सानी नहीं।

अब तक वे काफी उत्साहित हो चुके थे, बोले, "अजी! आप हमारी जमात में एक बार शामिल तो हो जाइए, फिर देखिए हम क्या-क्या गुल खिलाते हैं। आपके साहित्य को गली-मुहल्ले तक पहुँचाना हमारा जिम्मा। आपके साहित्य को, देखिए कैसे विदेशी ठप्पा लगवाकर फॉरेन रिटर्नड बनाकर इसकी माँग व कीमत दोगुनी कर देंगे। फोकट की मेहनत से क्या लाभ, जिससे हित न सधे वो कैसा साहित्य?और फिर साहित्य की क्या औकात! जो कुछ होता है वह होता है साहित्यकार। जो ज़माने के साथ नहीं चलते वे दौड़ में पीछे रह

जाते हैं, उनका तो नामलेवा भी नहीं रहता।"

ज़रा लम्बा साँस खींचकर वे फिर बोले, "अब सरस्वती का दामन छोड़ आ जाओ लक्ष्मी की शरण में। पुरस्कार व सम्मान प्राप्त करने का जुगाड़ भी आपको सिखा देंगे। फिर देखना, दोनों कैसे आपके इर्द-गिर्द घूमते नज़र आएँगे।

आप व आपकी रचनाओं पर शोधग्रंथ लिखवाना तो हमारा बाएँ हाथ का खेल है, फिर आपको अमर होने से कोई नहीं रोक पाएगा।

इंटरनेशनल स्टैंडर्ड ऑर्गेनाइज़ेशन से पैन.९००१३२३३४ जो चाहे नंबर दिलवा देंगे, जो कि आपकी साहित्यकारिता की उत्कृष्टता की पहचान होगा।"

वे नॉनस्टॉप बोले जा रहे थे, "आप तो वैसे भी लेखक व ऊपर से हिन्दी के प्रोफेसर हैं, आप तो बिना साहित्य के भी साहित्यकार हैं। आप चाहें तो साहित्यकारों की फ़सल उगा दें-धनिए की तरह। आपके लिए तो साहित्यकारिता में जाने के अनेक मार्ग प्रशस्त हैं। जिनमें से उत् ष्ट मार्ग हमारी जमात से होकर गुज़रते हैं।"

उनकी ये प्यारी-प्यारी बातें हमें गुदगुदाए जा रही थीं व हम अपनी विद्वता की प्रशंसा सुन दुहरे हुए जा रहे थे। इस दुहरने के क्रम में पता नहीं कब धड़ाम से डबलबेड से नीचे आ पड़े व हमारे ज्ञानचक्षु स्वयमेव खुल गए! हमें आभास हुआ वाकई साहित्य की दुनिया में अस्तित्व बनाए रखना है तो बिक्री का साहित्य लिखिए व साहित्यकार-बनिए ।

उजाला आयेगा

तोड़ दो बेड़ियों को मेरे
ऊँची उड़ान उड़ने दो।
लगती हूँ भीड़ का हिस्सा
अलग पहचान होने दो।
टूटती , गिरती,
बिखरती हूँ पर
खुद को संभालूँ,
हौसला है मुझमें।
मेरी खामोशी को
बेबसी मत समझो,
मूक लफ्जों में भी
तुफान समेटे हूँ।
राह रोकने वाले
जमाने की परवाह
नहीं मुझको
बंधनों को तोड़ने की
जज्बा है मुझमें।
दीप्ति की अभी
तो प्रभा बस दिखती।
जरा सब्र करो
उजाला और आयेगा।

दीप्ति सिंह रघुवंशी

शार्टफिल्म, विज्ञापन फिल्म व
माडलिंग में कर्य हेतु सम्पर्क करें
महिला उत्थान योजना अन्तगर्त
आनलाइन प्रशिक्षण
9451647845

देश की न्यायपालिका

वर्ष 1961 में मेरे पिताजी ***PWD*** में तृतीय श्रेणी के पद पर बिहार शरीफ में पोस्टेड थे। उस समय तक मेरा जन्म नहीं हुआ था।एक दिन उनके अधिशासी अभियंता ने उनको कहा कि कल राजगीर टूर पर चलना है, सो वो सुबह-सुबह आफिस पंहुचे और वहाँ से जीप में बैठकर चालक सहित नौ व्यक्ति रवाना हो गये। राजगीर पहुँच कर कोई सरकारी काम तो ना हो सका लेकिन दर्शन करने के पश्चात खाना पीना हुआ और इस दरमियान चालक की मान मनौवल में कोई कमी रह गयी और उसने वापस आकर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो में जीप के दुरुपयोग की शिकायत कर दी।

इस पर एसीडी ने भी अदालत में जीप के दुरुपयोग का तत्कालीन नालन्दा जिले की अदालत में चालक के अलावा शेष सभी आठ लोगों के विरुद्ध दावा कर दिया और कालांतर में इस केस को पटना सिफ्ट कर दिया गया।मेरे पिताजी 1995 में रिटायर हो गये, सन 2004 में पिताजी ने मुझे कहा कि आज मेरी कोर्ट में तारीख है और तबीयत खराब है सो कोर्ट मेरे साथ चलना है।

मेरी उम्र 2004 में 42 वर्ष हो चुकी थी। कोर्ट जाने पर पिताजी अपनी बारी पर पेश हुए तो पता चला कि आज सरकारी वकील साहब व्यस्त है और मुकदमे की पैरवी करने के लिए हाजिर नहीं हो सकते। जज साहब नयी तारीख देने लगे तो पिताजी ने कहा, “साहब इजाजत हो तो मैं कुछ अर्ज करता हूँ” और जज साहब के इजाजत देने के बाद पिताजी के बयान के शब्दशः मैं नीचे लिख रहा हूँ।

“मान्यवर 42 साल पहले जिस जीप के दुरुपयोग का ये मुकदमा है मैं उस जीप में सवार नौ लोगों में से पद व आयु में सबसे छोटा कर्मचारी था,और 1995 में वो अंतिम व्यक्ति था जो रिटायर हुआ और आज के दिन उन नौ लोगों में इकलौता जीवित व्यक्ति भी हूँ।
इस मुकदमे की पेशियों में हाजिर होने के लिए विभाग आज तक मुझे 1,30,000/ रूपये का ***TA/DA*** के रूप में भुगतान कर चुका है। और चूंकि मैं सबसे छोटा कर्मचारी था अतः मुझे ही सबसे कम मिला है लेकिन यदि बराबर भी मान लिया जाए तो लगभग ***130000 X 9 =*** 11,70,000 रूपये का भुगतान राजकोष से हो चुका है। और हर पेशी पर सरकारी वकील की फीस व हमारे वकील की फीस व न्यायालय के वक्त की बर्बादी अलग से।

“मान्यवर जैसा कि मैंने अर्ज किया कि मेरे सभी सह अभियुक्तों कि मृत्यु हो चुकी है और मै भी अब 70 वर्ष का हूँ और अब मैं भी अदालत में उपस्थित होने में असमर्थ हूँ। अतः मेरी आपसे प्रार्थना है कि चूंकि जीप दुरूपयोग का ही मामला है और आर्थिक दंड से शायद न्याय हो जाये, तो मैं अपने गुनाह को स्वीकार करता हूँ और अगर जेल भी जरूरी है तो जेल भेजो। मेरा क्या भरोसा, मैं अब पका आम हूँ, कभी भी टपक सकता हूँ। फिर आपकी अदालत किसको जेल भेजेगी?”

जज साहब ने तुरंत सरकारी वकील साहब को बुलाया और उनसे कहा कि अगर अभियुक्त गुनाह कबुल कर रहा है तो आप इसमें क्या साबित करना चाहते हैं? जीप के दुरुपयोग का अनुमानित खर्च 36रूपये किया गया। यद्यपि पिताजी अपने अफसर के निर्देशों का पालन कर रहे थे लेकिन चूंकि उनके द्वारा अपने अधिकारी के गलत आदेशों का विरोध नहीं किया गया इसलिए 160रूपये का अर्थ दंड लगाया गया।

इस प्रकार कुल लगभग 20 लाख रुपये स्वाहा होने के बाद 196/- रूपये की वसूली से हमारी न्याय व्यवस्था ने अपने न्याय के फर्ज को पूरा किया। हाँ पिताजी अभी भी जीवित हैं और जब भी कोई कोर्ट जाने की बात करता है तो वो मजे लेकर इस किस्से को सुनाते हैं।

सरिता यश भाटिया
नई दिल्ली

हिन्दी सिनेमा में चित्रित नए सरोकार

नयी शताब्दी का सिनेमा अपनी नवोन्मेषी दृष्टिए मौलिक संकल्पना और कुछ नये सवाल लेकर हमारे बीच उपस्थित हैण् नयी शताब्दी ने सिनेमा को नयी ऊर्जाए नये विषयए नये संस्कार दिये हैं। नयी सहस्राब्दि से पूर्व तक हिन्दी सिनेमा कुछ खास किस्म के फार्मूलों तक केन्द्रित रहा करता था और वे फार्मूले ही फिल्मों की सफलता की गारंटी हुआ करते थेए जैसे. प्रेम या रोमांसए जो कमोबेश आज भी किसी फिल्म को सफल बनाने की क्षमता रखता है अथवा नायक. खलनायक भिड़ंत या फिर प्रेम त्रिकोण या फिर भाइयों का आपसी प्यार, हिन्दू.मुस्लिम दोस्ती खोया.पाया या धार्मिक अथवा ऐतिहासिक जो इनसे हट कर लिए जाते थे, उन विषयों पर फिल्में बनाना जोखिम का काम माना जाता था और प्रायः फिल्मकार ऐसे जोखिम लेने से बचते थे। जो फिल्मकार ऐसे जोखिम ले लिया करते थे, उनकी फिल्मों को समान्तर सिनेमा या कलात्मक सिनेमा के सांचे में रखकर कुछ चुनिन्दा दर्शकों के लिए देखने को सीमित कर दिया जाता था, इसका नतीजा यह होता था कि बाक्स आफिस या कमाई की दृष्टि से ये फिल्में ज्यादातर घाटे का सौदा साबित होती थीं और इन्हें आम जनता के लिए अनुपयोगी घोषित कर देश के एक बड़े तबके से इन्हें वंचित कर दिया जाता था प्रायः बनते ही

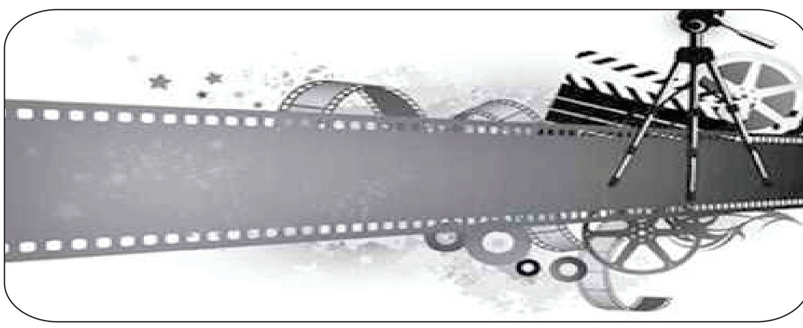

उनकी भूर्ण हत्या हो जाया करती थी। यही नहीं ऐसी फिल्मों के निर्देशकों को आर्ट फिल्म डायरेक्टर कहकर उनकी प्रतिभा को एक बड़े दर्शकों तक नहीं पहुँचने दिया जाता था। सातवें.आठवें दशक में मृणाल सेनए गोविन्द निहलानीए कृत्विक घटक जैसे निर्देशकों को इसकी चहारदीवारी में कैद कर उनकी फिल्मों के दर्शक वर्ग को एक बुद्धिजीवी वर्ग तक सीमित कर दिया गया था, हालाँकि शुरूआत से ऐसा नहीं था। प्रारंभिक दौर का सिनेमा अपने दायित्वबोध से भी जुड़ा था और आम जनता विशेषकर वंचित तबके के सरोकारों से उसका गहरा जुड़ाव हुआ करता था। सन 1936 की अछूत कन्या हो या चेतन आनंद की सन 1946 में आई नीचा नगर हो या राज कपूर, गुरु दत्त, सत्यजित रे, महबूब खान की फिल्में हों इनमें फंतासी से अधिक जनजुड़ाव हुआ करता था।शम्मी कपूर, धर्मेन्द्र, राजेश खन्ना, अमिताभ, जितेन्द्र जैसे लार्जर दैन लाइफ किरदार निभाने वाले अभिनेताओं के फिल्म जगत में आने से आर्ट फिल्म और पापुलर सिनेमा के बीच एक रेखा खिंच गइ।

नयी सहस्राब्दि ने इस परंपरागत ढांचे को तोड़ा और हिन्दी सिनेमा के पापुलर अथवा मेनस्ट्रीम सिनेमा एवं आर्ट सिनेमा के कृत्रिम विभाजन को खत्म करते हुए सिनेमा को सभी प्रकार की संवेदनाओं का एकसम

प्रतीक बना दिया, हालाँकि इसकी आहट नवें दशक में ही दिखने लगी थीए जब परिंदेए मिशन कश्मीर और प्रहार जैसी फिल्में आयीं, जिन्होंने आर्ट बनाम मेनस्ट्रीम सिनेमा की कृत्रिम रेखा को कुछ धुंधला करने का काम किया लेकिन इस दिशा में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया सन 2001 ने उस समय एक ओर नयी सहस्राब्दि अंगड़ाई लेते हुए अपनी आँखें खोल रहा था तो दूसरी ओर तीन फिल्में हिन्दी सिनेमा को बदलने के लिए तैयार थीं।ये फिल्मी थीं लगान, गदर , एक प्रेम कथा और दिल चाहता है, लगान और गदर रू एक प्रेम कथा तो एक ही दिन रिलीज हुई और दोनों ने ही भरपूर कमाई की। लगान के माध्यम से आशुतोष गोवारीकर ने पीरियड फिल्मों का हिन्दी सिनेमा में पुनःपदार्पण सुनिश्चित किया और आम आदमी की सिनेमा में नायक के पद पर फिर से प्रतिष्ठा सुनिश्चित की। इस फिल्म से वस्तुतः आर्ट सिनेमा और मेनस्ट्रीम सिनेमा की खाई काफी हद तक पट गई और इतिहास के उन प्रसंगों को भी सिनेमा में जगह मिलने की शुरूआत हुईए जिनका नाम इतिहास भी नहीं लेता।

गदर एक प्रेम कथा ने भी कमोबेश यही काम किया लेकिन लगान ने यह काम शान्तिपूर्वक किया तो इस फिल्म ने लाउड होकर किया। इस फिल्म ने इतिहास विशेषकर स्वतंत्रता संग्राम के बाद के भारत और पाकिस्तान के समाज को एक साथ चित्रित करने का काम भी किया, यह और बात है कि लगान की चर्चा प्रायः की जाती है लेकिन गदर एक प्रेम कथा का कोई नाम नहीं लेता, साल की तीसरी महत्त्वपूर्ण दिल चाहता है थी। जिसने नयी सहस्राब्दि के मेट्रोपोलिटन शहरों के युवाओं के प्रेमए आकाँक्षाओंए सपनों और उड़ानों को पर्दे पर दिखाने की शुरुआत की।

इन फिल्मों के आने के बाद वास्तव में हिन्दी सिनेमा ने अपना चोला बदला और मुन्ना भाई एमबीबीएसए ब्लैक, पाए लगे रहो मुन्ना भाई, इकबाल, चक दे इंडिया, फैशन, इश्कियाए पीपली लाइवए विक्की डोनर, पान सिंह तोमर, गंग आफ वासेपुर, लंच बाक्स, आई एम कलाम जैसी फिल्में आयीं और इन्होंने सफलता के नए कीर्तमान भी गढ़े। अब जबकि नयी सहस्राब्दि का दूसरा दशक भी बीतने को हैए ऐसे में आशा की जानी चाहिए कि हिन्दी सिनेमा उन विषयों को पर्दे पर लाता रहेगा। जिनकी चर्चा समाज, साहित्य और इतिहास में कम होती है और वे नायक जिन्हें गुमनामी के अँधेरे में रहने को अभिशप्त कर दिया गया है,वे भी अपनी पूर्ण अभा के साथ रजत पट पर चमक बिखेरेंगे।

डा पुनीत बिसारिया
साहित्य संस्कृति’
ललितपुर, 284 403 उ.प्र.

लौकी की आत्मकथा

पता है तुम्हे जब मुझे पहली बार वो बूढ़ा किसान कृषक बीज भण्डार से खरीद कर लाया था न तो मैं बहुत खुश हुई थी। मैं उस वक्त बीज थी , डिब्बे में बन्द पड़े पड़े उकता गयी थी मैं। अगली सुबह जब मुझे मेरे और साथियों के साथ उस भुरभुरी मिट्टी में बोया गया तो मुझे दर्द हुआ दबने के कारण लेकिन एक नए जीवन की आस में मैंने हँसते हंसते यह कष्ट स्वीकार किया । लगभग ३ -४ दिनों तक धरती के अंदर घुप अँधेरे में दबी दबी इंतजार करती रही अपने पुनर्जन्म का। चौथे दिन सुबह सूरज के किरणों के साथ मेरा भी जन्म हुआ । मुझे याद है वो बूढ़ा किसान और उसके आँखों की खुशी । लगभग दस दिनों के बाद मैं एक पौधे के रूप में आ गयी थी। दिनभर बिना किसी गर्मी सर्दी की चिंता किये वह बूढ़ा मेरे देख रेख में लगा रहा। कहीं कोई जानवर आ कर मुझे बर्बाद न कर दे इसलिए रात को टह्र्च लेकर वहीं खेत में मचान बनाकर बैठता। जरा सी आहट पर चौकन्ना हो जाता।

हर आठ से दस दिनों के अंतराल पर वह मेरी सिंचाई करता था। गोबर के खाद से लेकर फह्स्फोरस और पोटाश तक कितनी मेहनत से इंतजाम करता था। कुछ दिनों बाद मुझमे फूल लगने लगे पर मेरा और बूढ़े बाबा का दुर्भाग्य मौजेक रोग हो गया मुझे (पत्तियों का विकास रुकना और फल भी छोटे हो जाते हैं) । उस किसान ने कई दवाओं का प्रयोग किया तब जाके मैं ठीक हुई। कर्ज ले ले कर खेती कर रहे उस किसान की सारी उम्मीदें मेरे और मेरे साथियों पर टिकी थी। अब मैं जवान हो गयी थी। अपने रूप पर इठला रही थी मैं । जब कभी हवा मुझे स्पर्श करती मैं झूमने लगती। सच कहुँ तो अपना रूप देखकर मैं फूली न समाती थी हो भी क्यों न ?मैं थी ही उस लायक। अब वह समय आया जब मुझमे फल आने शुरू हुए। अपने बेटे की तरह पाल रहा था मुझे वो किसान। लगभग तीन महीने के बाद उस किसान ने एक एक कर मुझे तोडना शुरू किया दर्द भी हुआ और खुशी भी। खुशी इसलिए की बूढ़े बाबा का कर्ज उतर जाएगा । मैं तोड़कर बाजार में लायी गयी। मुझे और मेरे साथियों को सब्जी मण्डी में उतारा गया और हम नीचे पड़े रहे। कुछ देर बाद हम अलग अलग दुकानों पर चले गए। फिर तुम आये और पूछे भईया लौकी कैसे दिया ? पन्द्रह रूपये का एक -दुकानदार ने कहा। तुमने मुझे उठाया और अपना एक नाखून गड़ा दिया शायद यह देखने के लिये की मैं ताजी हुँ या नही। मुझे याद है तुमसे पहले भी तीन चार लोग मुझे नाखून से काट चुके थे। मुझे भी दर्द होता था पर यही मेरी नियति है। तुम मुझे घर लेकर आये और बीच से काट दिया। मैं अपने जीवन के चरम कष्ट पर थी पर मेरा जीवन सार्थक हो रहा था इसीलिए तो जन्मी थी मैं। यही तो था मेरे जीवन का उद्देश्य। तुमने मेरा दो प्याजा बनाया था और खा कर तुम सन्तुष्ट हो गए। पर मेरा आधा हिस्सा यूँ ही पड़ा था टोकरी में लहूलुहान । तुमने अगले दो दिन तक घर पर खाना नही बनाया शायद बाहर से ही खा कर आते थे । मेरा दूसरा हिस्सा सूख चूका था । तुमने उसे उठाया और कूड़ेदान में दाल दिया। तुम्हे क्या तुमने सिर्फ पन्द्रह रूपये ही तो दिया थे मेरे लिए, जरा कभी वो बूढ़े बाबा मिलें तो उनसे पूछना मेरा महत्व । तुमने मेरा नही उनका अपमान किया है। उस किसान का अपमान किया है जिसने तीन महीने अपने बेटे की तरह पाला था मुझे। तुम्हे जरा भी दुःख नही हुआ न। सच बताऊँ तुमने मुझे नही उस किसान के खून -पसीने को कूड़ेदान में डाला है।३

लोकेन्द्र मणि मिश्र दीपक

महामारी में स्त्री: जीवन और संघर्ष

युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं की हालत में महिलाएं और बच्चे ही सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। दुनिया भर में महामारी का रूप कोरोना वायरस भी इसका अपवाद नहीं है ।भारत में ल,कडाउन के वजह से महिलाओं पर दबाव है यह बात अलग है कि इसकी चपेट में आने वाले में महिलाओं के मुकाबले पुरुषों की तादाद ज्यादा है लेकिन इस बीमारी के महामारी में बदलने से भारतीय परिवार में अगर कोई सबसे ज्यादा प्रभावित है तो वह महिलाएं ही हैं। ल,कडाउन के दौरान पति व बच्चों के चौबीसों घंटों घर पर रहने की वजह से उन पर काम का बोझ पहले के मुकाबले बढ़ गया है अब उनको कामवाली के तमाम काम भी संभालने पड़ते हैं। नौकरी पेशा महिलाओं की मुश्किलें भी कम नहीं है अब उनको एक और घर से काम करना पड़ता है और दूसरी और घर का भी काम करना पड़ रहा है।

लाकडाउन क्या है? लाकडाउन एक प्रशासनिक आदेश होता है। लाकडाउन को एपिडमिक डीजीज एक्ट, 1897 के तहत लागू किया जाता है। ये अधिनियम पूरे भारत पर लागू होता है। इस अधिनियम का इस्तेमाल किसी विकराल समस्या के दौरान होता है। जब केंद्र या राज्य सरकार को ये विश्वास हो जाए कि कोई गंभीर बीमारी देश या राज्य में आ चुकी है और सभी नागरिकों तक पहुंच रही है तो केंद्र व राज्य सरकार सोशल डिस्टेंसिंग "सामाजिक स्तर पर एक-दूसरे से दूरी बनाना" को क्रियान्वित करने के लिये इस अधिनियम को लागू कर सकते हैं। इसे किसी आपदा के समय शासकीय रूप से लागू किया जाता है। इसमें लोगों से घर में रहने का आह्वान और अनुरोध किया जाता है। इसमें जरूरी सेवाओं के अलावा सारी सेवाएं बंद कर दी जाती हैं। कार्यालय, दुकानें, फैक्टरियाँ और परिवहन सुविधा सब बंद कर दी जाती है। जहाँ संभव हो वहाँ कर्मचारियों को घर से काम करने के लिये कहा जाता है। ल,कडाउन के दौरान आवश्यक सेवाएँ निर्बाध रूप से चलती रहती हैं। अपने दिशा-निर्देश में सरकार ने शासकीय आदेशों का पालन करना अनिवार्य बताया है।

कोरोना वायरस से बुरी तरह प्रभावित स्पेन से खबरें आई कि कुछ महिलाओं ने घरेलू यातना से बचने के लिये खुद को कमरे या बाथरूम में बंद करना शुरू कर दिया। परिणाम स्वरूप स्पेन की सरकार को ल,कडाउन के कड़े नियमों के बावजूद महिलाओं के लिये ढील बरतनी पड़ी। इस वैश्विक संकट के दौर में जहाँ एक ओर अफ्रीका व पश्चिम एशिया में गृहयुद्ध से जूझ रहे देशों में भी संयुक्त राष्ट्र महासचिव के युद्ध विराम की अपील का असर तो दिखाई दे रहा है, परंतु वहीं दूसरी ओर इन देशों में भी महिलाओं के प्रति होने वाली घरेलू हिंसा में वृद्धि देखी जा रही है। इतना ही नहीं सभ्यता व शिष्टाचार के शिखर पर होने का दावा करने वाले पश्चिमी दुनिया के देशों में भी घरेलू हिंसा के मामलों में वृद्धि देखी जा रही है।

सेंटर फार मानिटरिंग इंडियन इकोनामी का हालिया सर्वे बताता है कि लाकडाउन की वजह से भारत में कम से कम 14 से 15 करोड़ लोगों की नौकरियां मई महीने की शुरुआत में ही जा चुकी हैं। नौकरियाँ जाने का सिलसिला बदस्तूर जारी है क्योंकि लाकडाउन खत्म होने के बाद भी

वायरस के तेज प्रसार के वजह से व्यवसायिक संस्थानों में काम शुरू होता नहीं दिख रहा है । ऐसे में कोरोना वायरस दुनिया को किस हाल में छोड़ेगा यह फिलहाल बताना मुश्किल है लेकिन इस संकट का नकारात्मक असर भारत के कामगार तब के की लैंगिक समानता पर पड़ना शुरू हो चुका है।

कई शोधार्थी बता चुके हैं कि काम करने वाली महिलाओं की संख्या में भारी कमी आ सकती है। इस रिपोर्ट के अनुसार कई देशों में सबसे ज्यादा कटौती विशेषतः सेवा प्रधान क्षेत्रों जैसे रिटेल हास्पिटेलिटी, पर्यटन आदि से जुड़ी नौकरियों में देखी गई है इन क्षेत्रों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व ज्यादा है। लेकिन विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में स्थिति इससे भी खराब है वहां 70 फीसदी महिलाएं और संगठित क्षेत्रों में काम करती हैं जहां उनके पास नौकरियां बचाए रखने के विकल्प बेहद कम है। महिलाओं के लिए आगे की राह मुश्किल है भारत में गांव से आने वाली महिलाएं दिल्ली मुंबई लुधियाना और बेंगलुरु जैसे शहरों में प्रतिदिन या मासिक तनख्वाह पर काम करती हैअक्सर इन महिलाओं और नौकरी प्रदाता के बीच किसी तरह का कानूनी करार या पंजीकरण नहीं होता है। ऐसे में ल,कडाउन लगने के बाद कुछ इस वर्ग की महिलाएं शहरों में गुजारा करती रही लेकिन आखिरकार उन्हें अपने गांव की ओर रुख करना पड़ा।

महिलाओं की नौकरियां जाने से घरेलू हिंसा भी बढ़ गई है पूर्ण संकट के दौरान पुरुष घर पर है और पुलिस व्यस्त इन वजह से महिलाओं के खिलाफ हिंसा में पहले से कई गुना बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। दुनिया के 90 देशों में कोरोनावायरस के संक्रमण की वजह से करीब 400 करोड़ लोग अपने घरों में कैद हो गए, यह एक सुरक्षात्मक उपाय तो है लेकिन इसकी वजह से महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा के मामले बढ़े हैं

कोविड-19 के संक्रमण से पहले भी हर साल बड़ी संख्या में महिलाएं घरेलू हिंसा का शिकार होती रही है। संयुक्त राष्ट्र महिला द्वारा अप्रैल 2020 में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक पिछले 12 महीनों में 15 से 49 आयु वर्ग की 24.3 करोड़ महिलाएं और लड़कियां अपने पार्टनर के द्वारा यौन या शारीरिक हिंसा की शिकार हुई हैं साल 2017 में दुनिया भर में 87000 महिलाओं की गैर इरादतन हत्या हुई है इनमें से अधिकांश अंतरंग साथी या परिवार के सदस्यों द्वारा की गई है। यूएन वीमेन का कहना है कि महिलाओं के प्रति हिंसा के कारण दुनिया भर में लगभग 1.5 ट्रिलियन अमेरिकी डालर के नुकसान का अनुमान लगाया गया था और अगर और अगर कोविड-19 के संक्रमण के दौरान घरेलू हिंसा के बढ़ते मामलों को नहीं रोका गया तो यह महामारी के आर्थिक प्रभाव को और भी बढ़ाएगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी अपनी हालिया रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि यह महामारी महिलाओं के समाज में बराबरी हासिल करने के दशकों पुराने संघर्ष पर पानी फेर सकती हैं। रिपोर्ट कहती है कि इस महामारी के दौरान महिलाओं के अनपेड वर्क यानी बिना पैसे वाले काम में बेपनाह बढ़ोतरी हुई है। दुनिया भर से जो आंकड़े आए हैं उसे पता चलता है कि कोविड-19 के प्रकोप के बाद से महिलाओं और लड़कियों के प्रति हिंसा और खास तौर पर घरेलू हिंसा के मामले बढ़ गए हैं महिलाओं के लिए काम करने वाले कई सामाजिक संस्थाओं का आकलन है कि भारत में भी घरेलू हिंसा के मामलों में बढ़ोतरी के बाद राष्ट्रीय महिला आयोग भी स्वीकार करता है।

लाकडाउन से पहले तक हमीरपुर की एक महिला कामगार के रूप में काम करते थे

उनके पति एक शर्ट फैक्ट्री में काम करते थे "लेकिन फिलहाल हम दोनों घर पर हैं अगर मैं मना करने की हिम्मत करती हूं वह मुझे मारता है मेडिकल स्टोर हमारे घर से बहुत दूर है और वह कंडोम खरीदने के लिए नहीं जा सकता है क्योंकि पुलिस रास्ते में पूछती है कि वह किस काम से कहां जा रहा है। अब हमारी आशा जी भी अक्सर नहीं आती है" प्रियंका अपने पति और परिवार के बारे में ज्यादा बात नहीं करना चाहती है उनके पति को शराब की लत भी नहीं है। ऐसी कहानी बहुत सारी महिलाओं की है लेकिन केवल अशिक्षित घर हो या शिक्षा की कमी से ही नहीं हो रहा है बल्कि उच्च शिक्षित घरों में घरेलू हिंसा हो रही है।

हाल ही में एमबीबीएस डाक्टर से शिकायत मिली थी जिसे उसके घर में बंद कर दिया गया और ड्यूटी के लिए बाहर नहीं जाने दिया गया। पुलिस का पूरा ध्यान अभी कोविङ-19 पर केंद्रित है और घरेलू हिंसा के मामले आवश्यक सेवाओं के दायरे में नहीं आते हैं अगर हमारे देश की 49 फीसदी आबादी के साथ इस तरह का बर्ताव किया जाएगा उनकी शिकायतों पर कार्रवाई नहीं की जाएगी तो हम किस दिशा में जा रहे हैं? यही वजह है कि महिलाओं का एक हिस्सा ऐसा भी है जो पुलिस से मदद लेने के बजाय हिंसा बर्दाश्त करना बेहतर समझता है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा है कि दुनिया में कोरोनावायरस कोविड-19 के लगातार बढ़ते हुए संक्रमण का महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है जिसके कारण उनके प्रति मौजूद सामाजिक असमानता काफी बढ़ गया है ।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कोविड-19 के प्रभाव पर चर्चा करते हुए कहा कि इस महामारी के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य से लेकर उनकी आर्थिक स्थिति और सामाजिक सुरक्षा पर काफी बुरा असर पड़ा है महिलाओं के खिलाफ हिंसा भी काफी बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में जुटी हुई महिला और उनसे जुड़े हुए संगठनों की भूमिका के महत्व को समझना होगा महिलाओं के भविष्य को केंद्र में रखकर सामाजिक और आर्थिक नीतियां बनाई जानी चाहिए इसका परिणाम बेहतर होगा और सतत विकास के लक्ष्य को हासिल करने में भी मदद मिलेगी।

भारत में महिलाओं के प्रति होने वाले घरेलू हिंसा से निपटने के लिए पहले कदम के तौर पर यह आवश्यक होगा कि पुरुषों को महिलाओं के खिलाफ रखने के स्थान पर पुरुषों को समाधान का भाग बनाया जाए। मर्दानगी की भावना को स्वस्थ मायनों में बढ़ावा देने और पुराने घिसी -पिटी धैर्य से छुटकारा पाना अनिवार्य होगा।

भारत सरकार ने महिलाओं और बच्चों को घरेलू हिंसा से संरक्षण देने के लिए घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 को संसद से पारित कराया है। इस कानून में निहित प्रावधानों का पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए यह समझना जरूरी है कि पीड़ित कौन है? यदि आप एक महिला है और रिश्तेदारों में कोई व्यक्ति आपके प्रति दुर्व्यवहार करता है तो आप इस अधिनियम के तहत पीड़ित हैं। भारत सरकार ने वन स्टाप सेंटर जैसी योजना प्रारंभ की है जिनका उद्देश्य हिंसा के शिकार महिलाओं की सहायता के लिए चिकित्सीय कानूनी और मनोवैज्ञानिक सेवाओं की एकीकृत रेंज तक उनकी पहुंच को सुगम व सुनिश्चित करता है।

महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए वोग इंडिया ने लड़के रुलाते नहीं अभियान चलाया ।जबकि वैश्विक मानव अधिकार संगठन ने ब्रेकथ्र द्वारा घरेलू हिंसा के खिलाफ बेल

बजाओ अभियान चलाया गया यह दोनों ही अभियान महिलाओं के साथ होने वाली घरेलू हिंसा से निपटने के लिए निजी स्तर पर किए गए शानदार प्रयास थे।

घरेलू हिंसा से निपटने के लिए पुलिस की अलग विंग बनाने की आवश्यकता है इस कार्य में सिविल डिफेंस में कारक लोगों की सहायता ली जा सकती है। राष्ट्रीय महिला आयोग ने घरेलू हिंसा पीड़ितों की मदद के लिए 15 से अधिक गैर सरकारी संगठनों कि एक टास्क फोर्स बनाने का निर्णय लिया है ताकि महिलाओं की जरूरत के हिसाब से मदद की जा सके। इन सभी प्रयासों के द्वारा महिलाओं की स्थिति सुधारी जा सकती है साथ में यह भी आवश्यकता है पुरुष और महिला दोनों ही मिलकर इस महामारी में एक दूसरे का साथ दें। वैश्विक महामारी कोरोनावायरस समस्या बड़ी तो है पर इसका निदान और समाधान असंभव नहीं है जब हम साथ -साथ चलें तो समस्या का समाधान भी बहुत ही जल्द होगा।

संदर्भ

बीबीसी की रिपोर्ट।
महिला आयोग की रिपोर्ट
दैनिक जागरण समाचार पत्र
यू एन ओ की रिपोर्ट।

डॉ अनुराधा कुमारी
सहायक शिक्षिका ,
प्राथमिक विद्यालय कारोवीर
भदौरा ,गाजीपुर

म न भ व रा

कमसिन बाली उमरिया देखो बड़ा गजब है ढाये रे
मैं तड़पू सारी रैना यह देख देख मुस्काए रे
जब से आया जीवन की देहरी पर यौवन पाहुना,
मन की कोयलिया का कोई तो समझा जाए रे।
चार कदम चल चल के पीछे मुड़ - मुड़ के मैं देखूं रे,
अनजानी आहट पर जियरा हलक में अपने भिचूं रे।
आंचल जो उड़ना चाहे तो उड़ने उसे भी ना दूं मैं
मन की पतंग की डोरी खींचूं फिर भी उड़ती जाए रे।
मैं तड़पू सारी रैना ये देख- देख मुस्काए रे।
रोज खिले एक गुलाब मेरे मन की क्यारी में,
सुब्हा से संध्या तलक झूले तन की डाली में।
मन भंवरा गुनगुन करें तो कैद करूं पंखुड़ियों में,
बाबुल मोरे अब तो जागो ही यौवन का चमन मुरझाए रे।
मै तड़पू सारी रैना यह देख देख मुस्काए रे।
मैं भूली नादान तेरी चंचलता ना जानू रे,
अंखियों से जो करे तू बातें मैं कैसे पहचानू रे।
जग बैरी हो जाएगा जो ष्प्रीतष् की दहरी लाघूं में,
डोली लेकर आजा तू तेरी दुल्हन शर्माए रे।
कमसिन बाली उमरिया देखो बड़ा गजब ढाये रे,
मैं तड़पू सारी रैना यह देख देख मुस्काए रे।
जब से आया जीवन की देहरी पर यौवन पाहूना,
मन की कोयलिया का कूके कोई तो समझा जाए रे।

डॉ प्रियंका सोनी "प्रीत"

बेचारे जज साहेब

देखी सुनी कान की अदालत में,लीवर ने गुहार लगाई माई लार्ड मुझे तलाक चाहिए। जज साहब' ने पूछा, क्या है मुकदमा और किसके खिलाफ, आबाज बताओ ।आवाज " ने लंबी सी एक फाइल निकाली, और जज के सामने रख कर कहा साहब मुकदमा जीभ रानी के खिलाफ है।" जज कान ने कहा,' जीभ रानी' को बुलाया जाए, "जीभ रानी" हाजिर होऽऽ आवाज ने आवाज लगाई। "जीभ रानी" लहराती बलखाती थोड़े नखरे दिखाती हुई अदालत में आई।

आँख वकील ने जीभ रानी से कहा, आप पर लीवर ने मुकदमा किया है, "आप उसे बहुत परेशान करती हा"। जीभ' ने लहराते हुए कहा "मैं?""ना ना ना ना मैं बिचारी 32 दाँतो के बीच रहने वाली आपको क्या लगता है? जज साहब मैं परेशान करूँगी वह भी "लीवर" को वह मेरा अडोशी है ना पड़ोसी है, मैं तो उसे दूर-दूर तक नहीं पहचानती। लो कर लो बात, मैं जब जानती ही नहीं तो मैं उसे परेशान कैसे करूँगी भला?

अब आप ही बताओ "दाँत भाई क्या मैंने इसे परेशान किया? मैं तो आपके पास ही रहती हूँ है न ? जीभ ने इतराते हुए कहा । आ आ ए विचारे "दाँत" की धिघी बंध गई, तभी दाँत ने कुछ कहना चाहा, उसे टन्सिल ने इशारे से चुप रहने के लिए कहा।और तभी झूमता हुआ शराबी मुख ने शोर मचाया।

"आर्डर आर्डर आर्डर" .कान जज ने हथोड़ा पटकते हुए सब को चुप रहने के लिए कहा। और शराबी मुख ने होठों पर उँगली रखते हुए शी शी शी शी की आवाज निकालते हुए कहा चुप रहो। नहीं तो जज साहब हथोड़ा सर पर पटक देंगे। और अपना बचाव करते हुए "सर" ने कहा क्यों मेरे ऊपर क्यों एक छोटे बच्चे की तरह रोने लगा सर। कान जज' फिर चिल्लाया आर्डर आर्डर! उसी समय किडनी उछल कूदती आई।और उसने मुकदमा दर्ज कराया लीवर के खिलाफ। लीवर ने कहा मेरे खिलाफ क्यों' किडनी ने कहा तुम कच्चा माल सप्लाई करते हो मुझे क्या मूर्ख समझा है तुमने' और लीवर ने कहा जो जीभ रानी मुझे देती है वही तो मैं भेजता हूँ।जीभ ने कहा माई लार्ड मैं कुछ नहीं करती जो भी करता है यह नाक करती है सब कुछ। यह मुझे खुशबू देती है और मैं बेचौन हो जाती हूँ।तब नाक ने कहा "माय बाप" मेरा कोई कसूर नहीं है यह दिमाग जो है यही सारा खेल रचता है।

"दिमाग" ने कहा में कुछ समझा नहीं मैं कैसे सब। "हाथ" ने कहा सारा खेल तुम्हारा ही रचा हुआ है।तुमने सारी दुनियाँ को बस में कर रखा है। तुम कहो तो हम खाएं तुम कहो तो हम पिए तुम कहो तो हम चले और तुम्हारे कहने पर हम किसी का मर्डर भी कर देते हैं सब तो तुम कर आते हो। लहराते हुए हाथ ने कहा। तुम्हारे बिना तो इंसान बिल्कुल पंगु है। और तुम कहते हो मैंने क्या किया।

तभी लंगड़ाता हुआ पाव आया और उसने दिमाग के खिलाफ मुकदमा दायर किया। तुम्हारे करने से हम धर्म ईमान सब बेच देते हैं। यहाँ तक कि भगवान की भी पूजा तुम्हारे कहने से की जाती है। तब दिल ने, नैनो के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। माय बाप मैं एक तरफ शांति से रहना चाहता हूँ और यह नयन मुझे शांति से रहने नहीं देते।जब देखो

उसको देखते हैं और मुझे धड़काते रहते हैं। मैं तो इन धड़कनों से तंग आ गया, या तो इन नैनो ष्को फांसी दो नहीं तो मैं जहर खाता हूँ। आर्डर आर्डर आर्डर और' कान जज' ने जोर से हथोड़ा पीटते हुए।अपने बाल नोच डालें । तभी माथा जोर से चिल्लाया मुझे क्यों नोच रहे हो। और जोर जोर से रोने लगा दूहाई हो दुहाई हो।सब एक दूसरे के देखते हुए किसी ने टेबल उठा कर फेंका रहे थे कोई कुर्सी चला रहा था।और जीभ रानी ने तो दाँतो से कह कर पूरी फाइल पड़वा डाली।पूरी अदालत को यद्व का अखाड़ा बना दिया सब ने मिलकर। सब एक दूसरो को मार रहे थे।

जज कान अदालत छोड़कर भाग खड़ा हुआ। तुम सब की ऐसी की तैसी देख लूँगा सबको एक-एक करके और अपने ही कान खींचते हुए पागलों की तरह चिल्लाने लगा।कहाँ तो ष्जीभ रानी ष्के खिलाफ मुकदमा था।' और कहाँ सब एक दूसरे के खिलाफ युद्व करने लगे। सबसे समझदार हड्डी और त्वचा उसने सबको समझाया देखो समझदारी से काम लो सब एक दूसरौं के गले लगाओ उसी में मैं सब की भलाई है और छोड़ो या तलाक -बलाक तभी यह शरीर बचा रहेगा नहीं तो इस शरीर के बिना तुम्हारा अस्तित्व ही क्या है।और सब ने हड्डी और त्वचा की बात मानकर मुकदमा वापस कर लिया।और सभी प्रेम से रहने लगे एक जगह इकट्ठा होकर।

रेखा शर्मा की कलम से

चाँद का इश्क

कभी पूनम का हुआ
तो कभी ईद का
कभी बच्चों का मामा
तो कभी बेवफा प्रेमी
चाँद का इश्क भी क्या खूब है
कभी माशूक का आशिक
तो कभी पत्नी का सनम
कभी माँ का चंदा बेटा
तो कभी करवाचौथ का चाँद
चाँद का इश्क भी क्या खूब है
जिसने टूट कर चाहा
वो उसका हुआ
दिलों जा से निहारा
वो उसका हुआ
ये चाँद है साहेब ये सब का हुआ
ये चाँद है साहेब ये सब का हुआ

रेनुका सिंह
गाजियाबाद

चाँद

खूबसूरत चांद तो हूं नहीं मैं
पर सुंदर मन की मल्लिका कहलाऊं
हां तुम साज बन जाओ तो
सुरीली तान बन जाऊं मैं
मांग भरी टीका माथे पर
नयन मैं काजल भरके
सोलह सिंगार करके
प्यार मनुहार लिए दिल में
तुम्हारे मन की रानी
बन जाऊं मैं
प्रतीक्षारत कंठ सूखा लिए मैं
हाथ पूजा की थाली सजाए
खड़ी हूं कब से आस लगाए
छलनी से देखूंगी आज दो चांद
गगन में एक दूजा धरा पर।
छेड़ना सरगम कोई तुम
मैं तुम्हारी रागिनी हो जाऊं
हां तुम साज बन जाओ
मैं सुरीली तान बन जाऊं।

नीता चतुर्वेदी विदिशा

पीड़ा

तम से टकराकर करती है
पीड़ा उसकी हाहाकार
बिखर के मिट्टी के जर्रे में
आंसू बन के बहती है
ये कैसा है संसार
पिघल रहे हैं ग्रह नक्षत्र भी
पवन झकोरा बदहवास
लरज रहे अश्रु रजनी के
धरती रोती चुप्पी साध
ये कैसा है संसार!

खिली कली नाय मुरझाई
छितराया उसका घर द्वार
आँखों में मकरंद सजा था
हुई दरिंदों का शिकार
ये कैसा है संसार!
दीप जला ना फूल खिला
क्यों किसका उर पाषाण हुआ ?
वह अंगारों की भेंट हुई
हुई मानवता शर्मसार ये
कैसा है संसार !

जीवन मोती टूट गया
टूटा कंचन सा ईषार
दुर्गम अग्नि परीक्षा तेरी
इस शोषण का क्या है सार?
ये कैसा है संसार!
दृग से झड़ते अग्नि कण हैं
और हृदय से ज्वाला ज्वाल
नाश में जलता शलभ है देखो
निष्ठुर है दीपों का राग
ये कैसा है संसार!
सूने नयन में सपने उजड़े
माता रोए जारमजार
मिटने का अधिकार उसे ही
बोलो क्या है ये उपहार ?
ये कैसा है संसार!

बबिता सिंह हाजीपुर वैशाली

माँ भवानी

आन बसों धरती पर माँ तुम ,
संग खुशी धर खान भवानी।
मानुष राह निहार थके अब ,
पावन है नव रात सुहानी ।
मन्दिर सुंदर रौनक शोभित ,
दीप जले जग में अब मैया।
देर करो मत ध्यान धरो अब ,
आकर लाज बचा जगरानी।।
आन बसों —

आसन छोड़ उठा कर भालन,
दानव दूर भगा अब माता।
प्रेम भरो अब जन के अंतस,
जीवन में नव रंग समाता।
थाम चले पथ सत्य सदा सब,
हो अहसास सभी मन जागे।
त्याग ,घृणा हर मानव जीवन ,
प्रीत भरे नव भाव जगाता।।
आसन छोड़ ....

नवरात्रि नव रूप धरे माँ ,
आदिशक्ति, माँ दुर्ग भवानी ।
माँ के हर रूप लगे मनोहर ,
जैसे अद्भुत अमिट कहानी।।
प्रथमा शैल पुत्री माँ साजे ,
सुंदर मोहिनी रूप कुमारी ।
ब्रम्हचारणी माँ ज्ञान बाँटे,
है कुँवार नवरात्र सुहानी।।
नवरात्रि नव रूप....

पुष्पा गजपाल "पीहू"
महासमुंद छ. ग

72 घंटे 300 चीनी जसवसंत सिंह रावत

देवभूमि उत्तराखंड ना केवल अपने देवी-देवताओं और उनके मंदिरों के लिए प्रसि) है ब्लकि यह अपनी वीरता के लिए भी मशहूर है। देवभूमि का एक ऐसा ही महान वीर था जसवंत सिंह रावत। भारत और चीन के बीच 1962 की लड़ाई में वीर जसवंत सिंह रावत ने चीनी सेना को नाको चने चबवा दिया था। उन्होंने अकेले ही 72 घंटो तक चीनी सेना के 300 जवानों को मौत के घाट उतारा दिया। जानकार कहते हैं कि जसवंत सिंह एक की वीरता का लोहा चीनी सेना ने भी माना था। उनके अदम्य साहस और वीरता के लिए देश और पूरा उत्तराखंड हमेशा उन्हें याद रखेगा। आइए जानते हैं कि कैसे जसवंत सिंह ने तीन दिन तक चीनी सेना की नाक में दम करके रखा।

जसवसंत सिंह रावत हैं कौन?

वीर जसवंत सिंह रावत का जन्म 19 अगस्त 1941 को उत्तराखंड के ग्राम-बाड्यूं ,पट्टी-खाटली,ब्लाक-बीरोखाल, जिला-पौड़ी गढ़वाल में हुआ था। आपको बता दें कि जिस समय जसवंत सिंह सेना में भर्ती होने गए थे उस समय उनकी उम्र महज 17 साल थी। जिस कारण उन्हें सेना में भर्ती होने से रोक दिया गया था। इसके बाद फिर उनकी उम्र होने पर ही उन्हें सेना में भर्ती किया गया। वह 1962 की लड़ाई में चीनी सेना के खिलाफ युद्व में वीरगति को प्राप्त हो गए थे।

नूरानांग युद्वःचीन ने 17 नवंबर 1962 को अरुणाचल प्रदेश पर पर कब्जा करने के लिए चौथा व आखिरी हमला किया। जिस समय चीन ने अरुणाचल प्रदेश पर हमला किया उस समय अरुणाचल की सीमा पर भारतीय सेना की तैनाती नहीं थी। जिसका फायदा उठाकर चीन ने भारत पर हमला बोल दिया। चीन ने अरुणाचल पर हमला कर काफी तबाही मचाई और महात्मा बद्व की मूर्ति के हाथों को काटकर ले गए। चीनी सेना ने वहां औरतों की इज्जत भी लूटी।

गढ़वाल राइफल की तैनाती : चीनी सेना को रोकने के लिए वहां गढ़वाल रायफल की 4ह्ल बटालियन को वहां भेजा गया। वीर जसवंत सिंह रावत इस बटालियन के एक सिपाही थ, लेकिन सेना के जवानों के पास चीनी सेना का भरपूर जवाब देने के लिए पर्याप्त हथियार और गोला बारूद उपलब्ध नहीं था। जिस कारण चीनी सेना अरुणाचल से सेना के जवानों को वापस बुलाने का फैसला किया गया। सरकार के आदेश के बाद पूरी गढ़वाल बटालियन वापस लौट आई। लेकिन गढ़वाल राइफल के तीन जवान रायफल मैन जसवंत सिंह रावत, लांस नाइक त्रिलोक सिंह नेगी, रायफल मैन गोपाल सिंह गुसाई वापस नहीं लौटे। वीर जसवंत सिंह ने अपने दोनों साथियों लांस नाइक त्रिलोक सिंह नेगी और रायफल मैन गोपाल सिंह गुसाई को वापस भेज दिया और खुद नूरानांग की पोस्ट पर तैनात होकर चीनी सेना को आगे बढने से रोकने का फैसला किया।

जसवसंत सिंह रावत ने 300 चीनी सैनिकों को उतारा मौत के घाट : वीर जसवंत सिंह ने अकेले ही 72 घंटो तक लड़ते हुए चीनी सेना के 300 जवानों को मौत के घाट उतार दिया और किसी को भी आगे नहीं बढने दिया गया। वीर जसवंत सिंह जितने बहादुर थे उतने ही वह चालाक भी थे। उन्होंने अपनी चतुराई और बहादुरी के बल पर चीनी सेना को 3 घंटों तक रोके रखा। इसके लिए उन्होंने पोस्ट की अलग अलग जगहों पर रायफल तैनात कर दी थी और कुछ इस तरह से फायरिंग कर रहे थे जिससे की चीन की सेना को लगा यहां एक अकेला जवान नहीं

बल्कि पूरी की पूरी बटालियन मौजूद हैं।

शैला और नूरा ने क्या किया -इस बीच रावत के लिए खाने पीने का सामान और उनकी रसद आपूर्ति वहां की दो बहनों शैला और नूरा ने की जिनकी शहादत को भी कम नहीं आंका जा सकता। 72 घंटे तक चीन की सेना ये नहीं समझ पाई की उनके साथ लडने वाला एक अकेला सैनिक है। फिर 3 दिन के बाद जब नूरा को चीनी सैनिको ने पकड़ दिया तो उन्होंने इधर से रसद आपूर्ति करने वाली शैला पर ग्रेनेड से हमला किया और वीरांगना शैला शहीद हो गई। उसके बाद उन्होंने नूरा को भी मार दिया दिया और इनकी इतनी बड़ी शहादत को हमेशा के लिए जिंदा रखने के लिए आज भी नूरनाग में भारत की अंतिम सीमा पर दो पहाडिया है जिनको नूरा और शैला के नाम से जाना जाता है।

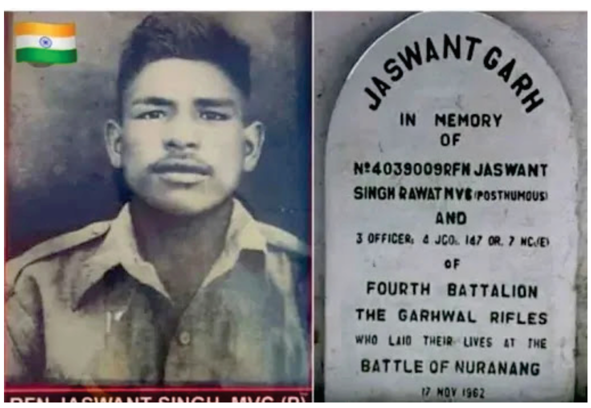

चीनी सेना ने जसवंत सिंह की बहादुरी को किया सम्मानित-नूरा और शैला की शहादत के बाद वीर जसवंत सिंह को मिलने वाली रसद आपर्ति कमजोर पडने लगी। बावजूद इसके वह दुश्मनों से लड़ते रहे, लेकिन रसद आपूर्ति की कमी के चलते आखिरकार उन्होंने 17 नवम्बर 1962 को खुद को गोली मार ली। चीनी सैनिको को जब पता चला कि वह 3 दिन से एक ही सिपाही के साथ लड़ रहे थे तो वो भी हैरान रह गए। चीनी सेना जसवंत सिंह रावत का सर काटकर अपने देश ले गई। अंत में 20 नवम्बर 1962 को यु) विराम की घोषणा कर दी गई। जिसके बाद चीनी कमांडर ने जसवंत सिंह की इस साहसिक बहादुरी को देखते हुए न सिर्फ जसवंत सिंह का शीश वापस लौटाया बल्कि सम्मान स्वरुप एक कांस की बनी हुई उनकी मूर्ति भी भेंट की।

वीर जसवंत के नाम का स्मारक - जसवंत सिंह ने जिस जगह पर चीनी सेना के दांत खट्टे किए थे उस जगह पर उनके नाम का एक मंदिर बनाया गया है। जहां पर चीनी कमांडर द्वारा सौंपी गई जसवंत सिंह की मूर्ति को भी रखा गया है। भारतीय सेना का हर जवान उनको शीश झुकाने के बाद ड्यूटी करता है। वहां तैनात कई जवानों का कहना है कि जब भी कोई जवान ड्यूटी पर सोता है जसवंत सिंह रावत उनको थप्पड़ मारकर जगाते हैं। मानो वह उनके कानों में कहते हो की मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी करो क्योंकि देश की सुरक्षा तुम्हारे हाथो में है।

इनके नाम से नुरानांग में जसवंत गढ़ के नाम से एक जगह भी है। जहां इनका बहुत बड़ा स्मारक है। बता दें कि इस स्मारक में उनकी हर चीज को संभाल कर रखा गया है। आपको जानकर हैरानी होगी कि आज भी यहां इनके कपड़ो पर रोज प्रेस की जाती है। साथ ही रोज इनके बूटो पर पोलिश भी की जाती है। यही नहीं रोज सुबह दिन और रात की भोजन की पहली थाली जसवंत रावत को ही परोसी जाती ह। जसवंत सिंह रावत भारतीय सेना के ऐसे पहले जवान है जिनको मरणोपरांत भी पदोन्नति दी जाती है। रायफल मैन जसवंत सिंह आज कैप्टेन की पोस्ट पर हैं और उनके परिवार वालो को उनकी पूरी सैलरी दी जाती है।

जय हिंद जय भारत

चेहरे पर मुस्कान लाती वो

बचपन की चारो सखियाँ सुमन, प्रेरणा, विदिशा और काव्या ग्रीष्मावकाश में अपने मायके में थीं।एक दिन सभी ने प्रदर्शनी देखने का कार्यक्रम बनाया।वहाँ पर गर्मी के दिनों में प्रदर्शनी लगती थी।तरह-तरह की दुकानें, झूले, सर्कस आदि सभी कुछ तो था।प्रदर्शनी देखना तो मात्र बहाना था।असल में वह चारो वहाँ बैठकर इत्मिनान से अपनी-अपनी बातें साझा करना चाहती थी।

एक अरसा बीत चुका था सभी को एक साथ मिले हुए।साफ्टी की दुकान में बैठकर गपियाते हुए स,फ्टी का आनंद भी लेती जा रही थीं। अचानक से विदिशा जोर-जोर से हँसने लगी। अन्य सखियाँ पूँछे जा रही,क्या हुआ? पर विदिशा की हँसी रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी।आस-पास बैठे हुए लोग भी मंद-मंद मुस्कराने लगे।बमुश्किल विदिशा हँसी रोकते हुए बोली...क्या बताऊँ? मुझे एक पुरानी घटना, अपने ससुराल में लगी प्रदर्शनी के मेले की याद आ गई।तभी हँसी नहीं रुक रही है।

अरे! तो हम लोगों को भी बताओ ताकि हम सभी आनंदित हों। अकेले-अकेले हँसे जा रही हो।विदिशा बोली...मेरे यहाँ यही प्रदर्शनी जनवरी-फरवरी के माह में लगती है।मै अपनी सासु माँ,ननद के साथ अक्सर जाया करती थी।मेरी सासु माँ को स,फ्टी बहुत पसंद थी।वह तीसरे-चौथे दिन कहती, चलो स,फ्टी खाने चलते हैं।

इसी क्रम में एक दिन हम तीनों लोग गए।पूरी प्रदर्शनी घूमकर, स,फ्टी खाकर वापस बाहर निकल आये।यह उस समय की बात है जब प्रदर्शनी के वहाँ से हटने का दौर चल रहा था।कुछ दुकानें चली भी गई थीं।उन दुकानों की बल्लियाँ आदि उखाड़ने से जहाँ-तहाँ गड्ढे हो गए थे।बाहर निकलने के बाद मेरी ननद को अचानक कुछ याद आया, बोली चलो एक बार और अंदर चलकर देख लें वरना तो ये प्रदर्शनी अब पूरे एक वर्ष बाद आयेगी।मेरे बहुत मना करने के बाद भी वह नहीं मानी।जबकि हम लोग काफी दूर निकल आये थे। उनकी जिद के सामने माँ जी भी निरुत्तर। वही हुआ हम लोग फिर अंदर गए। पर ये क्या?

अंदर घुसते ही मेरी ननद का एक पैर गड्ढे में पूरा चला गया।जितनी तेजी से पैर गड्ढे के अंदर गया था उतनी ही फुर्ती से चोट की परवाह किए बिना उन्होंने अपना पैर बाहर निकाला, ताकि उन्हें गिरते हुए कोई देख न ले। मै और माँ जी आश्चर्य चकित कि क्या हो गया?

अपने दर्द को नजर अंदाज करते हुए उनके मुँह से यही निकला..... कि हम इसी के लिए दुबारा अंदर आये थे। अब हँसने की बारी हम लोगों की थी। आज जबकि हमारे बीच सासु माँ नहीं हैं, पर प्रदर्शनी तो हर वर्ष लगती है। मै वा मेरी ननद उस घटना को याद कर खूब हँसते हैं। यकीन नहीं होगा, पर इस वाक्या को लिखते हुए वह दृश्य मेरे सामने घूम रहा है और मेरे चेहरे पर मुस्कान विद्यमान है।

मीरा द्विवेदी "वर्षा"
हरदोई, उत्तर प्रदेश।

सहेली सच्ची या झूठी

ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ! अरे बहू देखो तो किसका फोन है !आई मांजी ओ मांजी मेरी सहेली लता का फोन है। हेलो राधे राधे संध्या! हाँ हाँ राधे राधे बोलो लता क्या हाल-चाल है ।अरे क्या बताऊँ मेरी सास सठिया गई है।बुढ़िया मरती भी नहीं की चौन मिले, सुबह से लेकर शाम तक काम -काम- काम थोड़ी देर बैठने नहीं देती।करते करते थक गई मैं! क्यों क्या हुआ ,अरे उनका तो एक ही रोना चाय बना दो चाय बना दो मुँह बनाते हुए। सुबह से २ बार तो बना चुकी अब शाम होने को आई थोड़ी देर बैठूँ भी नहीं क्या? कभी दवाई खिलाओ कभी खाना खिलाओ बस यही चलते रहता मेरे जिंदगी में!

ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग लता लगता है, उमा का भी काल आ रहा है! हाँ ले लो न कांफ्रेस में! हाँ उमा राधे राधे! हाँ हाँ संध्या तुमको भी राधे राधे! लता भी फोन पर ही है ओहो! हाय लता !हाय उमा कैसी हो मैं ठीक हूँ !तुम कैसी हो ,मैं भी ठीक ही हूँ, ऐसे क्यों बोल रही हो! क्या करूँ इस बुड्ढे बुढ़िया ने तो नाक में दम कर के छोड़ दिया, ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग संध्या ने फोन देखते हुए अरे रमोला का भी फोन आ रहा है! फोन उठा लेती है! हेलो राधे राधे! राधे राधे संध्या ! कहो कैसी हो ? रमोला आई एम फाइन हाउ आर यू में भी बहुत अच्छी हूँ।

रमोला फोन पर लता और उमा भी है हाय उमा! उमा ने कहा रमोला से राधे राधे रमोला हाय लता कैसी हो? राधे राधे रमोला मैं ठीक नहीं हूँ क्या हुआ रे अरे वही रोज का रोना बुड्ढा बुड्ढी परेशान करके छोड़ रखे हैं! ओहो तुम अपने हस्बैंड की बोलती क्यों नहीं! अरे मेरी सुने तब ना अपने माँ-बाप के भक्त बने रहते हैं, मेरा बस चले तो इनका मुँह भी ना देखूँ !मैं तो सालों से सहती चली आ रही हूँ! कितने साल हुए तुम्हारी शादी को ४ साल हो गए चार हाथ को नचाते हुए बोली इतने में नाक में दम कर रखा है! एक एक मिनट पर इन्हें चाय चाहिए सुबह से २ बार बना चुकी हूँ! सुबह का नाश्ता बनाओ खाना बनाओ चाय बनाओ बच्चे के पीछे भागो! पति को टिफिन दो!

मैं तो करते-करते मर जाती हूँ! यह सब तो हम भी करते हैं सारा काम! तुम्हारे यहाँ तो आया भी है! अरे तुम लोग नहीं समझोगे मुँह बनाते हुए चलो ठीक है मैं रखती हूँ! और फोन कट हो जाता है! अरे बाबा रे कितना पकाती है, जब देखो रोना रोती रहती है! है ना संध्या! हूँ संध्या सिर्फ हूँ कहती है, अरे ओ उमा कितना पकाती है ये दिमाग खराब कर दिया जब देखो सास का रोना ससुर का रोना बिचारे इसके सास ससुर कितनी सीधे हैं! इसकी सास तो बेटा -बेटा करती रहती है सारे दिन!एक मेरे सास ससुर है! रोज तो घूमने चाहिए! खाने पीने में भी उतना ही नखरे है! सारा दिन भर में भागती रहती हूँ! मेरे तो दो दो बच्चे हैं! पर रमोला तुम्हारा बेटा तो हह्स्टल में रहता है ना उमा ने पूछा! हाँ यार पर अभी आया हुआ है छुट्टियों में! हास्टल में रहकर बिगड़ गया है!

मोबाइल तो छोड़ता नहीं सारा दिन भर गेम गेम बस गेम!पर तुम्हारे यहाँ तो लैपटप भी है ना! हाँ बाल झटकते हुए बोली !अमेरिका गए थे तब लेकर आए थे वहा से बहुत महंगा है !नखरे के साथ कहती है रमोला! और संध्या तुम कुछ नहीं बोल रही हो मेरे पास तो कुछ कहने के लिए है ही नहीं! मैं तो बस तुम लोगों की सुन रही हूँ! अरे तुम्हारी भी तो सास है! वह तुम्हें परेशान नहीं करती! नहीं मुझे तो उनसे कोई परेशानी नहीं उल्टे माजी मेरा बहुत ध्यान रखती हैं! एक माँ की तरह और तुम्हारे पति! मेरे पति भी बहुत अच्छे हैं! तुम्हारे बच्चे! बच्चों का क्या है बच्चे इस उमर में शैतानियाँ नहीं करेंगे तो कब करेंगे! तुम्हारे यहाँ आया लगी है क्या! नहीं नहीं मैं सारा काम अपने हाथ से ही करती हूँ, भाई मुझे उन लोग का काम पसंद नहीं आते संध्या ने कहा ! कहीं जाओ तो ध्यान लगा रहता है ! कब आया आएगी कहीं लौट के चली गई तो ! वैसे में मजा भी नहीं आता तुम्हारी तो सास है न उनको तो छोड़कर ही जाती होगी न! रमोला ने कहा ! नहीं- नहीं मैं उनको साथ मैं लेकर जाती हूँ! तुम्हें कोई परेशानी नहीं होती! हम तो अपनी सास ससुर को छोड़कर ही जाते हैं!

कहाँ-कहाँ लेकर फिरे सप्ताह में १ दिन तो मिलता है, इनके साथ घूमने का! उसमें भी बुड्ढा बुड्ढी को घुसा ले यह कहा की बात है ! अच्छा बाय कह कर रमोला ने फोन काट दिया ! संध्या हाँ। मैं सोच रही हूँ !मैं सादी ही ना करूँ उमा ने कहा! क्यों ऐसा क्यों सोच रही हो! मैं तो इनकी तरह झंझट में नहीं पड़ना चाहती! अरे उमा क्या तुम अपने माँ पिताजी का ध्यान नहीं रखती! अरे कैसी बात करती हो संध्या! माँ पिताजी का ध्यान मैं नहीं रखूँगी तो फिर क्या करूँगी! मेरे मम्मी पापा तो मुझे अपनी जान से ज्यादा प्यारे हैं! उसी तरह सास ससुर से भी प्यार कर देखो! घर स्वर्ग हो जाएगा स्वर्ग! तुम कितनी अच्छी सोच रखती हो संध्या! एक वह दोनों है !हरदम सास ससुर की बुराई करती रहती है! छोड़ो उमा उन्हें अरे सास ससुर के भी तो कुछ अरमान होंगे अपनी बहू से! उन्हें तो बस प्यार और देखभाल की जरूरत होती है! क्योंकि इस उम्र के पड़ाव में उनका शरीर थक जाता है! क्या हुआ जो हम उनका काम कर दे! अपने माँ पिताजी का भी तो करते हैं वह भी कितनी प्रेम से! वाह भाई संध्या वाह मान गए तुम्हें और उमा ताली बजाने लगती है।

रेखा शर्मा मुजफ्फरपुर बिहार

मेरी सखी सुधा

कल अनायास ही बाजार में अपनी एक सखी सुधा से भेंट हो गई । देखकर सुखद आश्चर्य हुआ । हमने तो कल्पना भी नहीं की थी कि इतने दिनों बाद कभी ऐसे भी जीवन के इस मोड़ पर मिलना हो जायेगा । हम दोनों अपनी खरीदारी का मोह त्याग कर एक रेस्टोरेंट में आकर बैठ गए । बातों का सिलसिला चल निकला । कितनी बातें थीं कहने-सुनने को , कितने अविस्मरणीय पल थे जो हमें पुनः जीने थे । बातचीत के मध्य मैंने गौर किया कि बात करते करते सुधा बीच में कहीं गुम सी हो जाती है जैसे किसी चिंता से ग्रस्त हो । पूछने पर पता चला कि बेचारी अपनी सासू माँ से परेशान है। हमारे यहाँ अधिकांश विशेष तौर से दो ही प्रकार की बहुएं हैं- एक वे जो सास के अत्याचारों से पीड़ित हैं , दूसरी वे जो स्वंय सास की नाक में दम किए हैं । बीच की राह चलने वाले प्राणी अब विलुप्त श्रेणी में प्रवेश कर रहे हैं । तो बात त्रस्त भीत सुधा की है जिसकी सास इन दिनों उस के साथ हैं ।

तीन कमाऊ श्रवणकुमारों की माँ - बारी-बारी से जहाँ मन चाहा , उसी बेटे के पास पहुँच जाती हैं और शेष दोनों बहुओं की घोर निंदा का रसास्वादन जिस बहू के साथ होतीं हैं नियमपूर्वक करातीं रहतीं हैं । यह चक्र अनवरत चलता रहता है और क्रमानुसार प्रत्येक बहू इस निंदा का शिकार बनती है । निंदा भी कैसी- पेट भर खाने को नहीं देती, गर्म रोटी को तरस जाते हैं , बड़ी कंजूस है , फल मेवा कम देती है, दस बार कहो तब दूध ,चाय , नींबू पानी बनाकर देती है ।जब देखो तब अपने मायके वालों से फोन पर गपियाती रहती है। बच्चों को सिखाए है दादी से बात मत करो, एकदम संस्कारहीन है - आदि-आदि । जबकि हकीकत यह है कि हर बहू सामर्थ्य भर उनकी सेवा में कमी नहीं रखती और वे 70 वर्ष की आयु में पूर्णतः स्वस्थ हैं । अभी अपने बेटे से कह कर पूरा चौकअप करवाया ,25000 लग गए, कुछ नहीं निकला । यहाँ तक कि बीपी शुगर भी नहीं जो इस आयु में स्वाभाविक है । खाने का नियम यह है कि सुबह की शुरूआत शहद डले नींबू पानी से होती है । फिर चाय के साथ बादाम,अखरोट, मुनक्का और मिश्री का मिश्रण । नाश्ते में घी के पराठे के साथ एक गिलास दूध , लंच में गर्मागर्म रोटी , दाल , सब्जी ,दही परमावश्यक है । इसके बाद फल । शाम की चाय स्नैक्स के साथ और डिनर में भी सब्जी गर्म रोटी और कुछ मीठा । सोते समय दूध भी अन्यथा रोना शुरू हाय पैरों में जान नहीं रही , कोई हमारा ख्याल नहीं रखता । बीच बीच में अन्य फर्माइशें - मोती भस्म ला दो, हाय च्यवनप्राश खतम हो गया , घुटनों में लगाने का तेल और टानिक लाने की इस घर में किसी को याद नहीं, ऊपर से दूध का गिलास भी पूरा भर कर नहीं दिया जाता बहू से ।

किसी के दुख सुख से मतलब नहीं उन्हें सिर्फ अपने खाने-पहनने की चिंता । यदि बच्चों की पढ़ाई के समय टीवी धीमा करने की कह दो तो फौरन चिल्लाना शुरू- हाय मेरे ही बेटे के घर में टीवी देखने की इजाजत नहीं । फिर खुद ही मोबाइल पर रिश्तेदारों से शिकायतें करना शुरू कर देतीं हैं । अपने हाथ तो सब सेवा करने के बाद भी केवल बुराई ही आती है ।

अब आज एक नई समस्या आ गई

है जो मुझे चिंता में डाले है- सुधा रुंधे स्वर में कह रही थी । क्यों ऐसा क्या हो गया, मैंने पूछा तो बोली , आज उन्होंने अल्टीमेटम दे दिया है कि उन्हें भी लैपटाप चाहिए । कई दिनों से पति और बच्चों को अपने-अपने लैपटाप पर काम करते घूर- घूर कर देखतीं थीं पर परिणाम यह निकलेगा , मैंने सोचा भी नहीं था । अब तुम्हीं बताओ - मात्र अक्षर ज्ञान वाली मेरी सासू माँ लैपटाप का क्या करेंगी, विचारणीय प्रश्न है । लेकिन उन्हें चाहिए ही क्योंकि सबके पास है और वे किसी से कमतर नहीं रहना चाहतीं । एक तो सुरसा जैसी मुख फाड़ महंगाई , ऊपर से उनकी जिद - क्या करें । ऐसी स्थिति में उनके आज्ञाकारी बेटे तटस्थ हो परमहंस बनकर बैठ जाते हैं । मुझे सुधा की बात सुनकर हँसी आ गई- अब क्या करेगी , लेकर देगी क्या । हाँ, उदास लहजे में सुधा बोली, छोटा बेटा इस साल दसवीं कक्षा में है, उसकी कोचिंग के लिए कुछ रुपए बचा कर रखे हैं उन्हीं से ले दूँगी वर्ना जीना मुश्किल कर देंगी ।

मैने भारी मन से सुधा से विदा ली । अपने घर आते समय रास्ते भर यही प्रश्न मेरे मन को आंदोलित करता रहा कि आज जब लोग बुजुर्गो के प्रति श्सम्मान करें, उनका ध्यान धरेंश की बात करते हैं ,यह उचित भी है जिन बुजुर्गो के आशीर्वाद से हमें सुखी और समृद्ध जीवन मिला है , उनकी यथोचित सेवा हमारा धर्म और कर्तव्य है पर ऐसे बुजुर्गो को भी अपने बच्चों की भावनाओं और आवश्यक आवश्यकताओं का ख्याल रखने की मंशा नहीं रखनी चाहिए क्या ?

कान्ति शुक्ला
भोपाल

अन्नदाता

भूख, गरीबी, लाचारी का,
मखौल न बनना चाहिये,
हर हाल में अन्नदाता का,
सम्मान होना चाहिये।१।

हरियाली फसलों में वो,
स्वेद अपना बहाता है,
उन फसलों का ही वो ,
दाना एक ना पाता है।२।

जिस समाज को देता निवाले,
वो ही कर्ज में डुबोता है।
किसान का हक सदा ही,
किसान को मिलना चाहिये।३

हर हाल में अन्नदाता का ,
सम्मान होना चाहिये।

कर्ज ले लेकर जीवन को,
बोझ सा वो ढोता है,
कर्जे से ही बुवाई के,
बीज खेत में लाता है।४।

पाई पाई जोडे हरदम,
फिर भी खाली रहता है।
उम्मीद बो बो कर वो,
लाचारी काट लाता है।५।

उसको भी खुश होने का,
अधिकार मिलना चाहिये.
'हर हाल में अन्नदाता का '
सम्मान होना चाहिये।६।

सुखमिला अग्रवाल
मुम्बई"महाराष्ट्र"

SSB film & Modeling Hub
Let's Go To A Golden Tomorrow
Just call female and male For modelin
SS Business HuB
Let's go to the dream world
SS Magazine
SSB Interior Designer
SS Advertising
2nd Wife Tiffin service
SS Online Selling
You Want TO Job?
SSB film & Modeling
Apply To Hub
SSB Old House Taker
Make Money
SS On/offline Training
Make Identity
Every City & Village
SS Web Design & Mobil App
JUST CALL
प्रधान कार्यालय गाजीपुर जनपद से प्रकाशित पहली रजि० त्रैमासिक पत्रिका
साहित्य सरोज
संस्थापक श्रीमती सरोज सिंह
निखारें अपनी लेखन,वाचन,अभिनय प्रतिभा को
SSB Printing
कप पर प्रिंटिंग
साड़ी पर प्रिंटिंग
शादी कार्ड प्रिंटिंग
2nd वाइफ टीफिन सर्विस
SS Business HuB
खाना ससुराल ऐसा,
सासू के प्यार जैसा
घर बैठे मँगाये खाना केवल
3500 रूपये
में दो टाइम
या 150 रूपये
विधा नहीं)
4500
2020 By By
2020 Welcom
SS Web Design & Mobil App HuB
Technical Support
24X7
JUST CALL
SS Online Selling HuB
Your Business Will Grow
घर बैठे बनाते जाओ, बनाते जाओ, हम देगें बाजार
One Call that Changes Your Life
SS Advertising HuB
Your Identity You And Your Business Will Grow
Call For Every Advertisement In Your City&Village
INTERNET
TELEVISION
RADIO
PRINT
NEWSPAPER
BILLBOARD
MAGAZINE
विज्ञापन
JUST CALL
SSB Interior Designe
In Your City In Your Village
We Will Decorate Your Office,
Your Home, The World OF Your Dream
Less money
Best decoration
Natural decoration
Experienced decorato
JUST CALL
SSB Business Training
सीखे
वेबसाईट बनाना।
अभिनय।
फोटोग्राफी।
स्क्रीन प्रिन्टिंग।
मॉडलिंग।
मार्केटिंग।
अभिनय हेतु पुरुष/महिला सम्पर्क करें।
बनवायें अपनी वेबसाईट, दुकान को करायें ऑनलाईन, बेचे अपना प्रोडक्ट ऑनलाईन, पब्लिस करायें अपनी ई-बुक
www.ssbhub.co.in
यदि गाँव में आप का पुराना मकान है, आप यहाँ नहीं रहते कभी गाँव आना भी चाहें तो साफ सफाई में परेशानी, रहने की व्यवस्था,भोजन की व्यवस्था जैसे झंझटो से नहीं आते, अपनो से दूर हो रहे हैं, यादे धुमिल हो रही हैं, बचपन के साथीयों की यादें तड़पा रही हैं, आपका मकान गिर रहा है, बदरंग हो रहा है, पूर्वजों की मेहनत बर्बाद हो रही है, तो आप के लिए हम लायें हैं एक विशेष योजना
SSB Old House Taker
Gahmar, Ghazipur (U.P.)232327
Aff By SS Business HuB
हम करायेंगें प्रति सप्ताह सफाई, दीप प्रज्ज्वलन, मरम्मत, जिससे रहेगा आपका मकान बिल्कुल सुरक्षित, किसी समय आने पर मिलेगा मेंटेंन बिल्कुल मेंटेंन। आप करेगें बिना मेहनत प्रवास, साथ ही हम करेंगें आपके रोज खाने की व्यवस्था।
बस आपसे लेगें हम एक छोटी सी रकम हर माह
हमारी योजनाएं :-साधारण सुविधा, मध्यम सुविधा एवं विशेष सुविधा
हम आपको देगें एक बहुत बेहतर सेवा
जिस घर को बनाने में लगे जिसका खून-पसीना उस घर का दर्द बस वही समझ सकता है।

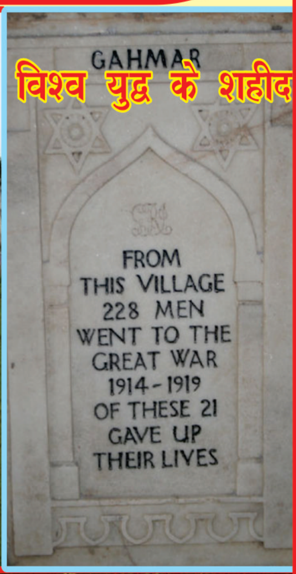

गहमर गाजीपुर उ.प्र. से प्रकाशित त्रैमासिक साहित्य सरोज के पटल पर आप हार्दिक स्वागत है।